दैवज्ञपृथुयशोविरचिता

षट्पञ्चाशिका

"भट्टोत्पलीय" - संस्कृतटीका "वागीश्वरी" हिन्दीटीकासहिता

डा. सत्येन्द्र मिश्र

॥ श्रीः ॥

काशी संस्कृत ग्रन्थमाला

२८७

दैवज्ञपृथुयशोविरचिता

षट्पञ्चाशिका

"भट्टोत्पलीय"-संस्कृतटीका "वागीश्वरी" हिन्दीटीकासहिता

हिन्दीटीकाकारः

डॉ. सत्येन्द्रमिश्रः

ज्यौतिषाचार्यः, पी-एच. डी.

सहसम्पादकः-संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसंकायस्थ-ज्यौतिषविभागे,

काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी-५

चौखम्भा संस्कृत संस्थान

भारतीय सांस्कृतिक साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक

पो० बा० नं. ११३९

के. ३७/११६, गोपाल मन्दिर लेन (गोलघर समीप मैदागिन)

वाराणसी - २२१ ००१ (भारत)

प्रकाशक :

चौखम्भा संस्कृत संस्थान

भारतीय सांस्कृतिक साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक

पोस्ट बाक्स नं० ११३९

के. ३७/११६, गोपाल मन्दिर लेन, गोलघर (समीप मैदागिन)

वाराणसी – २२१००१ (भारत)

टेलीफोन : ३२५७८५९, टेलीफैक्स : ०५४२-२३३३४४५

E-mail: cssvns@sify.com

संस्करण : पुनर्मुद्रण वि० सं० २०६५

मूल्य : [illegible]-००

शाखा :

चौखम्भा पब्लिकेशन्स

४२६२/३ अंसारी रोड, दरियागंज

नई दिल्ली - ११०००२ (भारत)

टेलीफोन : २३२५९०५०, टेलीफैक्स : ०११-२३२६८६३९

E-mail: cpub@vsnl.net

मुद्रकः चारू प्रिन्टर्स, वाराणसी

THE
KASHI SANSKRIT SERIES
287

ṢAṬPAÑCĀŚIKĀ

BY
The Renowned Astrologer
Prithuyasha

with

'Bhaṭṭotpalīya' Sanskrit and 'Vagiṣvarī'
Hindi Commentaries

Exposed in Hindi by
Dr. SATYENDRA MISHRA
Jyotishāchārya, ph. D.
Asstt-Editor, Dept. of Jyotish, S. L. T.,
Banaras Hindu University
Varanasi-5

CHAUKHAMBHA SANSKRIT SANSTHAN
Publishers and Distributors of Oriental Cultural Literature
Post Box No. 1139
K. 37 / 116, Gopal Mandir Lane (Golghar Near Maidagin)
VARANASI - 221001 (INDIA)

भूमिका

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्ध्निसंस्थितम्॥

जिस प्रकार वेदाङ्गों नें ज्यौतिषशास्त्र को "मूर्धा" स्वरूप माना गया है उसी प्रकार प्रश्नशास्त्र में भी प्रस्तुत ग्रन्थ षट्पञ्चाशिका को माना गया है; क्योंकि "स्युः मूर्द्धन्या ऋटुरषाणां" के अनुसार ग्रन्थ का नाम भी मूर्द्धन्य वर्ण "ष" से प्रारम्भ होता है।

"षकार श्वेत आख्यातो मूर्द्धन्यो वृषसंज्ञकः" मन्त्राभिधान के इस वचन के अनुसार भी ग्रन्थ का सर्वश्रेष्ठ होना सिद्ध होता है, क्योंकि ग्रन्थ के नाम में भी दो मूर्द्धन्य वर्णों (ष-ट) का योग है। ग्रन्थ के सात अध्यायों में क्रमशः ७-१७-५-५-५-४-१३५६ श्लोक हैं। षष्ठ अध्याय में नष्टवस्तु प्राप्ति के विषय में विचार है जबकि प्रथम अध्याय में भी एक श्लोक (५ वॉ) नष्ट वस्तु प्राप्ति के सम्बन्ध में दिया हुआ है जो कुछ असंगत सा प्रतीत होता है। क्योंकि जब इसके विषय में पूरा एक अध्याय ही है तो एक श्लोक अलग से देने का कोई औचित्य नहीं था। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि पचपन श्लोकों का सृजन करने के पश्चात् ग्रन्थकार ने और एक श्लोक संयुक्त किया ताकि इस ग्रन्थ में ५६ श्लोक हो जाय क्योंकि तभी इस ग्रन्थ का नाम मूर्द्धन्य वर्ण से प्रारम्भ हो सकता था।

एकाक्षर कोष मे भी "ष" का अर्थ सर्वश्रेष्ठ-गर्भविमोचन इत्यादि दिया हुआ है अतः ग्रन्थ का प्रथमनामाक्षर जो "ष" है वह इसका "सर्वश्रेष्ठ" और "गूढ़ विषय प्रकाशक" होना सिद्ध करता है।

ग्रन्थकार के विषय में कोई प्रामाणिक आलेख प्राप्त नहीं है। ऐसे जनश्रुतियाँ तो बहुत हैं परन्तु उनके प्रमाण कहीं से प्राप्त नहीं होते। इतना तो ग्रन्थकार ने स्वयं लिखा है कि मैं वराहमिहिर का पुत्र पृथुयश हूँ परन्तु ये नहीं लिखा है कि मैंने कब इस ग्रन्थ का प्रारम्भ या समापन किया अथवा मेरा जन्म किस समय हुआ। अतएव ग्रन्थ या ग्रन्थकार के काल निर्धारण के विषय में कुछ कहना या लिखना अत्यन्त दुरुह है। मात्र अनुमान से ही कुछ कहा या लिखा जा सकता है। मंगलाचरण के साथ

"परार्थमुद्दिश्य" ऐसा कथन ग्रन्थकार के उदात्त भावों को स्पष्ट करता है। ग्रन्थ में सात अध्याय हैं जो क्रमशः इस प्रकार हैं—

१. होराध्याय
२. गमागमाध्याय
३. जयपराजयाध्याय
४. शुभाशुभाध्याय
५. प्रवास चिन्ताध्याय
६. नष्टप्राप्त्यध्याय
७. मिश्रकाध्याय

ग्रन्थ के इन सातों अध्यायों में मानव जीवन के समस्त आवश्यकताओं से सम्बन्धित प्रश्नों का विचार है। सही अर्थों में यह ग्रन्थ "गागर में सागर" के समान है। इसकी प्रक्रिया सरल और सुगम्य है। ज्यौतिष का साधारण जानकार व्यक्ति भी इसके द्वारा फलादेश कर सकता है। छठी शताब्दि से लेकर आजतक इस ग्रन्थ का प्रश्नशास्त्र में सर्वोपरि स्थान है।

यद्यपि इसकी अनेक हिन्दी टीकाएँ हैं फिर भी अल्प संस्कृत जानने वालों के लिए मैंने "वागीश्वरी" हिन्दी टीका में इसके दुरुह स्थलों को यथा सम्भव सारिणी और चक्रों के द्वारा सुगम्य बनाने का प्रयास किया है। दैवज्ञ भट्टोत्पल की संस्कृत टीका के साथ यह ग्रन्थ छात्रों के लिए और भी उपादेय हो गया है। मेरा यह प्रयास कहाँ तक सफलीभूत है इसका आकलन तो छात्र और सुहृद् विद्वद्जन ही कर सकते हैं।

इसकी टीका में स्थल-स्थल पर गुरुवर्य प्रो० डा० रामचन्द्र पाण्डेय जी और पं० हीरालाल मिश्र जी से जो सहयोग व निर्देश प्राप्त होता रहा है उसके लिए मैं इन लोगों का सतत आभारी हूँ। इसके प्रकाशक चौखम्भा संस्कृत संस्थान के स्वत्वाधिकारी श्रीमोहनदास जी गुप्त तथा उनके सुपुत्र चिरञ्जीवि राजेन्द्र जी का भी मैं अत्यधिक आभारी हूँ जिन्होंने इस ग्रन्थ की टीका करने की मुझे प्रेरणा दी और बराबर उत्साह वर्द्धन भी करते रहे, एतदर्थ मैं इनके अभ्युदय व चिरायुष्य की कामना करता हूँ—

वसन्त पञ्चमी
(वागीश्वरी जयन्ती)
सं० २०४६

सुहृत्कृपाकांक्षी
सत्येन्द्र मिश्र

विषयानुक्रमणिका

॥ श्रीः ॥

षट्पञ्चाशिका

'भट्टोत्पली' संस्कृतटीका 'वागीश्वरी' हिन्दीटीकासहिता

प्रथमोऽध्यायः-१

केशाजार्कनिशाकरान् क्षितिजविज्जीवास्फुजित्सूर्यजान्
विघ्नेशं स्वगुरुं प्रणम्य शिरसा देवीं च वागीश्वरीम् ।
प्रश्नज्ञानवतो वराहमिहिरापत्यस्य सद्वस्तुनो
लोकानां हितकाम्यया द्विजवरष्टीकां करोत्युत्तमाम् ॥ १ ॥

कानीह शास्त्रे सम्बन्धाभिधेयप्रयोजनानि भवन्तीत्युच्यते। आब्रह्मादिविनिश्चितमितं वेदाङ्गमिति सम्बन्धः। लग्नहोराद्रेष्काणनवांशसप्तांशकादिना ग्रहसंस्थानदर्शनेन च जयपराजयलाभहृतनष्टादिपरिज्ञानमभिधेयम्। अन्यत्र शुभाशुभकथनादिहलोकपरलोकसिद्धिरिति प्रयोजनम्। किमेभिरुक्तैरित्युच्यते।

"सर्वस्यैव हि शास्त्रस्य कर्मणो वापि कस्यचित्।
यावत्प्रयोजनं नोक्तं तावत्तत्केन गृह्यते॥"

कस्यास्मिन् शास्त्रेऽधिकारः। उच्यते। द्विजस्यैव, यतस्तेन षडङ्गो वेदोऽध्येतव्यो ज्ञातव्यश्च। कान्यङ्गानीत्युच्यते।

"शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषां गतिः।
छन्दसां लक्षणं चैव षडङ्गो वेद उच्यते।" इति।

सतामयमाचारो यच्छास्त्रस्यारम्भेष्वभिमतदेवतानमस्कारं कुर्वन्ति तदयमपि आवन्तिकाचार्यो द्विजो वराहमिहिरात्मजः

पृथुयशाः संक्षिप्तां प्रश्नविद्यां स्वसूत्रैः कर्तुकामः आदावेव भगवतः श्रीसूर्यस्य नमस्कारं स्वनामाख्यापनं च प्राह——

प्रणिपत्य रविं मूर्ध्ना वराहमिहिरात्मजेन पृथुयशसा ।
प्रश्ने कृतार्थगहना परार्थमुद्दिश्य सद्यशसा ॥ १ ॥

भट्टोत्पलः– वराहमिहिराख्यस्याचार्यस्य आत्मजेन पुत्रेण पृथुयशसा पृथुयशा इत्यभिधानं यस्य तेन रविं सूर्यं मूर्ध्ना शिरसा प्रणिपत्य नमस्कृत्य प्रश्ने प्रश्नविषये इयं प्रश्नविद्या कृता रचिता । कीदृशी अर्थगहना अर्थोऽभिधेयं गहना गुह्यो यस्याः सा अर्थगहना । किमर्थम् । परार्थमुद्दिश्य परेषां लोकानामर्थः प्रयोजनं परार्थमुद्दिश्याभिधाय । कीदृशेन पृथुयशसा सद्यशसा सत् शोभनं यशः कीर्तिर्यस्य तथाभूतेन विद्याशौर्यादिगुणयुक्तेनेत्यर्थः ।। १ ।।

टीकाकारकृत मंगलाचरण

शारदा शारदाम्भोज वदना वदनाम्बुजे ।।
सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ।।

वागीश्वरी—वराहमिहिर का पुत्र मैं पृथुयश ज्योतिषशास्त्र के प्रधान देवता "श्रीसूर्य" को नतमस्तक हो प्रणाम करके लोकोपकारार्थ "षट्पञ्चाशिका"[1] नामक प्रश्नविषयक ग्रन्थ की रचना करता हूँ ॥ १ ॥

लग्नचतुर्थसप्तमदशमानां स्थानानां विचारप्रविभागमाह—

च्युतिर्विलग्नाद्धिबुकाच्च वृद्धिर्मध्यात् प्रवासोऽस्तमयान्निवृत्तिः ।
वाच्यं ग्रहैः प्रश्नविलग्नकालाद् गृहं प्रविष्टो हिबुके प्रवासी ॥२॥

भ०—च्युतिः च्यवनं स्थानपरिभ्रंशः विलग्नात्तात्कालिकात्पृच्छालग्नात् च्युतिर्ज्ञेया । (पृच्छां पृच्छति अमुकस्थानान्मे च्युतिर्भविष्यति वा नेत्येतज्ज्ञेयम्) एवं हिबुकाच्चतुर्थस्थानाद् गृहसुहृत्सुखानां वृद्धिर्ज्ञेया । मध्यं दशमस्थानं तस्मात् प्रवासो ज्ञेयः । प्रवसनं प्रवासः

१. इस ग्रन्थ में मात्र ५६ श्लोक हैं जिसके कारण इसको षट्पंचाशिका कहा जाता है ।

अन्यदेशगमनम्। अस्तमयात्सप्तमस्थानान्निवृत्तिः प्रवासान्निवर्तनम्। कथमेवमुच्यते चरस्थिरद्विस्वभावात्मकत्वेन। यत उक्तम्-प्रश्नविलग्नकालात् प्रश्नः पृच्छा, प्रश्ने विलग्नं प्रश्नविलग्नं तस्य कालः समयस्त स्मात् तेन चरराशौ लग्नगते स्वामिना युते दृष्टेवा शुभग्रहाणामन्यतमेन वा युते दृष्टे परिशिष्टग्रहसंयोसन्दर्शनरहिते च्युतिर्भवति अन्यथा न भवत्येव। यत उक्तम्, वाच्यं ग्रहैः कारणभूतैः वाच्यं वक्तव्यं सर्वमेवैतत्।

एवं स्थिरराशौ पापग्रहदर्शनयोगरहितेऽपि न भवत्येव। यतो वक्ष्यति 'वृषसिंहवृश्चिकघटैर्विद्धि स्थानं गमागमौ न स्त' इति। द्विस्वभावे भवति न वा स्वामिशुभग्रहदर्शनाधिक्यात्पापानामल्पत्वाच्च भवति अन्यथा न भवत्येव। एवं चतुर्थस्थानस्य सामान्यतयैव शुभग्रहस्वामिदर्शनयोगाद् गृहादीनां वृद्धिः अन्यथाऽपचयः। अथो प्रवासः। दशमस्थानस्य चरराश्यात्मकत्वात् पापग्रहदर्शनात्प्रवासः। अन्यथा स्वामिशुभग्रहदर्शनयोगाच्च न प्रवासः। सप्तमस्थानस्य चरराश्यात्मकत्वात् पापग्रहदर्शनान्न प्रवासान्निवृत्तिः, अन्यथा स्वामिसौम्यग्रहदर्शनयोगाच्च निवृत्तिः गृहं प्रविष्टो हिबुके प्रवासी हिबुके चतुर्थस्थाने प्रवासी विदेशस्थो नरो गृहं वेश्म प्रविष्टो न वेति वक्तव्यम्। चतुर्थस्थाने स्वस्वामिदृष्टे युक्ते वा गृहं प्रविष्टोऽन्यथा न प्रविष्ट इति।

"हिबुके ग्रहेप्रविष्टे गृहं प्रविष्टं प्रवासिनं विद्धि।
हिबुकास्तमयान्तरगे ग्रहे च पथि वर्तते पुरुषः॥" इति

तस्य प्रविष्टस्य यावन्ति दिनानि व्यतीतानि तावन्त्येव गृह प्रविष्टस्य प्रवासिनो गतानि, अथवा यावद्भिर्दिनैः स ग्रहश्चतुर्थस्थानें यास्यति तावद्भिरेव प्रवासी गृहं प्रवेक्ष्यति। एतद्दूरगतस्य गमनं चेत्। यस्मिन्वक्ष्यमाणे याते सति वक्तव्यं नान्यथेति। एतच्च पुरस्ताद्विस्तरेणाभिधीयत इति॥ २॥

वा०—प्रश्नविशेष का उत्तर जिस जिस भाव से देना चाहिए या विचार करना चाहिए वे इस प्रकार है।

स्थान	विषय
लग्न	"च्युति" अर्थात् स्थान परिभ्रंश सम्बन्धी, गमन-आगमन, वृष्टियोग, जेल से छूटने आदि का विचार।
चतुर्थ	"वृद्धि" गृहसुख, मित्रविचार, नौकरी, प्रवासी के आगमन-गमन का विचार।
सप्तम	"निवृत्ति" यात्रानिवृत्ति, शत्रुनिवृत्ति, नष्टवस्तु की प्राप्ति-अप्राप्ति, रोगनिवृति आदि का विचार।
दशम	"प्रवास" परदेश में लाभ-अलाभ, सुख-दुख, स्थिरता-अस्थिरता का विचार।

चारों स्थानों से सम्बन्धित विषयों का विचार उन उन स्थानों में स्थित चर-स्थिर-द्विस्वभाव राशियों से और ग्रहों की युति या दृष्टि से किया जाता है। जैसे "प्रवास" सम्बन्धी प्रश्न में यदि दशम स्थान में चर राशि हो और पापग्रहों की दृष्टि हो तो यह योग शुभकारक नहीं होता है। यदि स्थिर राशि हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो यह शुभकारक होता है ॥ २ ॥

अधुना तन्वादीनां द्वादशभावानां शुभाशुभज्ञानमाह—

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः।
पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥३॥

भ०—"तनुधनसहजसुहृत्सुतरिपुजाया मृत्युधर्मकर्मायव्ययाः इति द्वादश भावा उक्ताः। "कुजशुक्रज्ञेन्द्वर्कज्ञशुक्रकुजजीवसौरियमगुरवः" इति राश्याधिपा उक्ताः। तथा "क्षीणेन्द्वर्कयमाराः पापास्तैः संयुतः सौम्य" इति ग्रहाणां पापसौम्यत्वमुक्तम्। तथा दशमतृतीये, नवमपञ्चमे, चतुर्थाष्टमे कलत्रं च पश्यन्ति पादवृद्धया फलानि चैवं प्रयच्छन्ति। सर्वमेतद्दृष्टिफलमुक्तं) तेन पृच्छासमये यः कश्चिद्भावस्तन्वादिकः स्वामिनाऽऽत्मीयनाथेन दृष्टोऽवलोकितस्तस्य भावस्य वृद्धि रुपचयोऽस्ति विद्यते। अथवा तेनैव स्वामिना युतः संयुक्तस्तस्यापि वृद्धिरस्ति। सौम्यैर्वा स्यात्। सौम्यग्रहाणां बुधगुरुशुक्रपूर्णचन्द्राणामन्यतमेन वा युतो

दृष्टो वा भावः स्याद्भवेत् तस्यापि वृद्धरतिवर्द्धनं वक्तव्यम् । पापैरेवमिति । एवमनेन प्रकारेण पापैः पापग्रहैरपि रविक्रूरयुतबुध-भौमसौरिक्षीणचन्द्राणामन्यतमेन यो यो भावो युक्तो दृष्टो वा तस्य भावस्य हानिरपचयो निर्देष्टव्या वक्तव्या । कस्मादिति तदेवाह । पृच्छतां जन्मतो वेति । पृच्छतां पृच्छासमये नराणां, जन्मतो वा जायमानानाम् । तथा चोक्तं जातके—

"पुष्णन्ति शुभा भावास्तन्वादीन् घ्नन्ति संस्थिताः पापाः ।
सौम्याः षष्ठेऽरिघ्नाः सर्वे नेष्टाव्ययाष्टमगाः ।। इति ।

तथा "जन्मन्याधानकाले प्रश्नकाले वे"ति ।। ३ ।।

वा०—जो जो भाव अपने स्वामी से अथवा शुभग्रह (बु. गु. शु. पूर्ण-चन्द्र) से युत या दृष्ट हो तो उन भावजन्य फलों की वृद्धि होती है । यदि पापग्रह (सू. मं. श. क्षीणचन्द्र. पापयुत बुध) से युत या दृष्ट हो तो उन भावजन्य फलों का ह्रास होता है । यह जन्मकुण्डली और प्रश्नकुण्डली दोनों में समझना चाहिए ।

द्वादश भावों की संज्ञा

तनु, लग्न, मूर्ति, अङ्ग, उदय, कल्प, प्रथम भाव
धन, स्व, कोश, अर्थ, कुटुम्ब, द्वितीय
पराक्रम, भ्रातृ, दुश्चिक्य, सहज, तृतीय
चतुर्थ, अम्बा, हिबुक, बन्धु, पाताल, तुर्य, सुख, सुहृद्, मातृ भाव
सन्तान, तनय, आत्मज, वाक, तनुज, बुद्धि, पुत्र, विद्या, पंचम
द्वेष, वैरी, क्षत, षष्ठ
स्त्री, मद, मदन, काम, अस्त, जामित्र, द्यून, जाया, सप्तम
आयु, मृत्यु, छिद्र, रन्ध्र, निधन, लग्नपद, अष्टम
भाग्य, धर्म, गुरु, शुभ, तप, मन्त्र, नवम
राज्य, कर्म, व्यापार, तात, आज्ञा, मान, आस्पद, गगन, व्योम, मध्यम, मेषूरण, दशम्
लाभ, आय, आगम, प्राप्ति, एकादश
व्यय, अन्त्य, प्रान्त्य, रिष्फ, अन्तिम, द्वादश

द्वादश भावों से विचारणीय विषय

सोना, चाँदी, रत्न, जवाहरात, मोती
अष्टधातु, द्रव्य, कुटुम्ब
ऐश्वर्य

शरीर
वर्ण, यश, चिन्ह
आयु, अवस्था, जाति, स्वभाव
आराम, गुण, रूप, सुख
दुख

दान, खर्च, भोग, शान्ति
मंगलक्रिया, उपासना
अनुष्ठान

भाई, बहन
नौकर, पराक्रम
वीर्य, भोजन
लाटरी

द्रव्यलाभ
ब्याज, लाभ
पाण्डित्य, वाद
विवाद

माता, घर
सवारी, खजाना
खेती, लाटरी

राज्य
पूज्य, पिता, व्यवहार
कर्म, प्रवृति, मुद्रा, भेद
स्थान, सिक्का

गर्भ, पुत्र
पुत्री, विद्या
बुद्धि, राज्यभाव
विनय
नीति

विवाह
स्त्री, व्यवहार
लड़ाई, प्रवास

धर्म
यज्ञ, देवालय
तीर्थयात्रा, मंत्रदीक्षा
वापी, कूप
तालाब

शत्रु
रोग, चोरभय
संग्राम, चतुष्पाद, क्रूरक्रिया
वर्ण, मातुल

मृत्यु
ऋण, मार्ग, संकट
गृहच्छिद्र

प्रश्नसमये लाभादौ शुभाशुभज्ञानमाह—

सौम्ये विलग्ने यदि वाऽस्य वर्गे शीर्षोदये सिद्धिमुपैति कार्यम् ।
अतो विपर्यस्तमसिद्धिहेतुः कृच्छ्रेण संसिद्धिकरं विमिश्रम् ॥४॥

भ०—सौम्यानां शुभानां ग्रहाणां बुधगुरुशुक्रपूर्णचन्द्राणामन्यतमे विलग्ने स्थिते, यदि वाऽस्य सौम्यग्रहस्य वर्गे तत्कालं विलग्नं प्राप्ते—

"गृहहोराद्रेष्काणांशनवमभागद्वादशांशकास्त्रिंशः ।
वर्गः प्रत्येतव्यो ग्रहस्य यो यस्य निर्दिष्टः ॥" इति ।

वर्गलक्षणमुक्तम् । अथ शीर्षोदये पृच्छालग्ने—

"मेषाद्याश्चत्वारः सधन्विमकराः क्षपाबला ज्ञेयः ।
पृष्ठोदया विमिथुनाः शिरसाऽन्ये ह्युभयतो मीनः ॥" इति ।

राशिपृष्ठोदयत्वं शीर्षोदयत्वं चोक्तम्, एतेषामन्यतमे यदि विलग्ने पृच्छतो भवति तत्कार्यसिद्धिं साध्यतामुपैति गच्छति । अतो विपर्यस्तमिति । अतोऽस्मात्पूर्वोक्ताद्विपर्यस्तं विपरीतमस्ति

असिद्धिहेतुरसाध्यतायाः कारणम्। एतदुक्तं भवति। पापग्रहेण विलग्नस्थेन पापवर्गे वा विलग्नगते पृष्ठोदये वा लग्नगते प्रष्टुः कार्यं न सिद्ध्यति। कृच्छ्रेण क्लेशेन ससिद्धिकरं कार्यसाधकं भवति। एतदुक्तं भवति। पापसौम्यौ द्वावपि लग्नस्थौ भवतः पापसौम्यौ वर्गस्थौ वा उभयोदयो मीनो शीर्षोदयः पापयुक्तः पापवर्गस्थो वा पृष्ठोदयः सौम्ययुक्तः सौम्यवर्गस्थो वा उभयोदयो वा तदा क्लेशेन सिद्धिकृद्भवति तत्र च बलाधिक्यान्निश्चय इति ।। ४ ।।

वा०—लग्न मे शुभग्रह (बु. गु. शु. पूर्णचन्द्र) हो या शुभग्रहों के षड्वर्ग मे लग्न हो अथवा शीर्षोदय राशि लग्न मे पड़े तो कार्य की शीघ्र ही सिद्धि होती है। इसके विपरीत अर्थात् लग्न में पापग्रह हों या पापग्रहों के षड्वर्ग में लग्न रहे अथवा पृष्ठोदय राशि लग्न में पड़े तो कार्य की असिद्धि होती है। यदि शुभग्रह और पापग्रह दोनों से सम्बन्ध रहे तो कष्ट से कार्य की सिद्धि होती ।। ४ ।।

विशेष—षड्वर्ग-होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश, त्रिंशांश।

शीर्षोदय राशियाँ—सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ।

पृष्ठोदय राशियाँ—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु, मकर।

उभयोदय—मीन।

नष्टलाभज्ञानमाह—

होरास्थितः पूर्णतनुः शशाङ्को जीवेन दृष्टो यदि वा सितेन।
क्षिप्रं प्रणष्टस्य करोति लब्धिं लाभोपयातो बलवाञ्छुभश्च ।।५।।

भ०—शशाङ्कश्चन्द्रः पूर्णमण्डलः शुक्लदशमीमारभ्य कृष्णपञ्चमीं यावत् पूर्णतनुर्भवति। तथा च यवनेश्वरः—

"मासे च शुक्लप्रतिपत्प्रवृत्तः पूर्णः शशी मध्यबलो दशाहे।
श्रेष्ठो द्वितीयेऽल्पबलस्तृतीये सौम्यैस्तु दृष्टो बलवान् सदैव ।।"

एवं पूर्णतनुः शशाङ्कः होरायां लग्ने स्थितः—

"होरेति लग्नं भवनस्य चार्द्धमिति।"

लग्नस्य होराव्यपदेशः। तत्रस्थः शशी जीवेन गुरुणा दृष्टोऽव-

लोकितो यदि वा सितेन शुक्रेण दृष्टो भवति । यदि वेत्ययं निपातो विकल्पे तदा क्षिप्रमाश्वेव प्रणष्टस्यापहृतस्य द्रव्यादेर्लब्धि लाभं करोति । लाभोपयात इति । अथवा शुभः सौम्यग्रहो बलवान् वीर्ययुतो लाभे एकादशस्थाने उपयातः प्राप्तो भवति तथापि च शब्दात्क्षिप्रमेव नष्टस्य लब्धि करोतीति । ग्रहाणां स्थानदिक्चेष्टाकालबलं जातके प्रोक्तम् । बलवान्मित्रस्वगृहोच्चैरित्यारभ्य स्वदिनादिष्वशुभशुभा इत्येतदन्तम् ॥ ५ ॥

वा०—पूर्णचन्द्र (अर्धाधिक) प्रश्नलग्न में हो और गुरु अथवा शुक्र से दृष्ट हो तो नष्टवस्तु का शीघ्रलाभ होता है, अथवा कोई भी शुभग्रह बलवान होकर यदि एकादश भाव में रहे तो नष्टवस्तु का शीघ्र ही लाभ कराता है ॥ ५ ॥

विशेष—कोई भी ग्रह स्वराशि में, मित्रकी राशि में, स्व षडवर्ग में, या मित्र के षड्वर्ग में, स्व उच्चराशि में, अपने मूलत्रिकोण राशि में, स्वनवांश में, या शुभ ग्रह से दृष्ट होने पर बली होता है ।

ग्रहबल चक्र

ग्रह-	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशिबली-	विषम (पुरुष)	सम (स्त्री)	विषम (पुरुष)	विषम (पुरुष)	विषम (पु)	सम (स्त्री)	विषम (पु)
दिशाबली-	दक्षिण (चतु.)	उत्तर (दशम)	दक्षिण (चतु०)	पूर्व (लग्न)	पूर्व (लग्न)	उत्तर (दशम)	पश्चिम (सप्तम)
अयन बली-	उत्तरायण	उत्त.	दक्षि.	दक्षि.	दक्षि.	दक्षि.	दक्षि.
अहोरात्र-	दिवा	रात्रि	रात्रि	दिवारात्रि (उभय)	दिवा	दिवा	रात्रि
पक्षबली-	कृष्ण	शुक्ल कृष्ण	कृष्ण	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	कृष्ण

हृतनष्टमुष्ठिगतचिन्तितानां धातुमूलजीवानां परिज्ञानमाह —

स्वांशं विलग्ने यदि वा त्रिकोणे स्वांशे स्थितः पश्यति धातुचिन्ताम् ।
परांशकस्थश्च करोति जीवं मूलं परांशोपगतः परांशम् ॥६॥

भ०—यः कश्चिद्ग्रहस्तत्कालं स्वांशे आत्मीयनवांशके स्थितः

विलग्ने प्रश्नलग्ने तत्कालोदित स्वांशे तस्यैव ग्रहस्यात्मीयं नवांशकं तच्च पश्यत्यवलोकयति तदा प्रष्टुः धातुचिन्तां वदेत्। सुवर्णादि-मृत्तिकान्तं धातुद्रव्यम्। एतदुक्तं भवति। स्वांशकस्थो ग्रहः स्वांश-कयुक्तं लग्नं पश्यति तदा धातुचिन्तां प्रवदेत्। अथवा लग्नगतं स्वांशं न पश्यति तदा त्रिकोणे नवमस्थाने स्थितं तमेव स्वांशं पश्यति, पञ्चमे स्थितं तमेव स्वांशं पश्यति नवमस्थानं पञ्चमस्थानं वा स्वांशकसमेतं पश्यतीत्यर्थः। यतो लग्नपञ्चमनवमानामेक एवां-शस्तुल्यकालमुदेति। एतदुक्तं भवति। स्वनवांशकस्थो ग्रहो लग्न-पञ्चमनवमानामन्यतमं स्वांशकयुक्तं पश्यति तदा धातुचिन्तां वदेत्। तत्रापि धाम्याधाम्यप्रविभागो ग्रहांशकवशाद्वाच्यः पापग्रहांशकसम-वस्थितस्य धाम्यम्। सौम्यग्रहांशकसमवस्थितस्याधाम्यमिति। परां-शकस्थस्तु करोति जीवमिति। यः कश्चिद्ग्रहपरनवांशकस्थोऽन्य-ग्रहनवभागावस्थितो विलग्नगतं स्वांशं पश्यति त्रिकोणयोरन्यतमगतं वा तदा जीवचिन्तां वदेत्। पुरुषादिमरीसृपान्तो जीवः। तत्रापि ग्रहयुक्तनवांशकवशात् द्विपदसरीसृपादिविभागः। मिथुनकन्यातुला-धनुःपुर्वार्द्धंकुम्भा देवा नराः पक्षिणश्च द्विपदा ज्ञेयाः। मेषवृषसिंह-धन्विपरार्धाश्चतुष्पदाः। कर्कवृश्चिकमकरमीनाः सरीसृपाः। तत्र मीनो ह्यपदः अन्ये तु बहुपदाः। मूलं परांशोपगतः परान्नमिति। यः कश्चिद्ग्रहः परांशोपगतोऽन्यग्रहनवांशके समवस्थितो विलग्नगतं परनवांशकं त्रिकोणयोरन्यतमगतं वा पश्यति तदा मूलं करोति मूलचिन्तां प्रवदेत्। एतद्यतः प्रायः सम्भवति तद्ग्रहदर्शनाज्ज्ञेयम्। वृक्षादितृणान्तं मूलं तत्रापि ग्रहयुक्तनवांशकवशात्स्थलजलत्वं ज्ञेयम्, कर्कमकरमीनाः जलजाः। अन्ये तु सर्वे स्थलजा इति। तथा च चिन्तासिद्धिप्रश्नज्ञानमुक्तम्—

> "स्वांशे स्थितो विलग्ने यदा ग्रहः स्वांशकं निरीक्षेत।
> धातोस्तदानुचिन्तां करोति परसंस्थितो जीवम्॥
> परभागसन्निविष्ट परांशकं प्राग्विलग्नमायातम्।
> पश्यति मूलं प्रवदेदेवं नवपञ्चमे ज्ञेयम्" इति॥ ६॥

वा०—नष्ट हुई वस्तु के विषय में, या मानसिक चिन्ता के विषय में, या मुष्ठिगत वस्तु के विषय में प्रश्न हो तो धातु-जीव-मूल सम्बन्धी प्रश्नों का विचार इस प्रकार करना चाहिए।

प्रश्न काल में कोई भी ग्रह अपने नवांश में रहकर लग्न-पञ्चम या नवम भावगत स्व नवांश राशि को देखे तो पृच्छक के मन में **"धातु"** (सोना, चाँदी इत्यादि) सम्बन्धी प्रश्न समझना चाहिए। यदि अन्य ग्रह के नवांश में रहकर लग्न-पञ्चम या नवम भावगत स्वनवांश राशि को देखे तो **"जीव"** (मनुष्य-पशु-पक्षी) सम्बन्धी प्रश्न समझना चाहिए। यदि अन्य ग्रह के नवांश मे रहकर लग्न-पञ्चम या नवम भावगत दूसरे ग्रह की नवांश राशि को देखें तो **"मूल"** (वृक्ष-तृण-फलादि) सम्बन्धी प्रश्न समझना चाहिए।

ग्रहस्थिति	दृष्टि	प्रश्नवर्ग
(१) स्वनवांश में हो	लग्न-पञ्चम या नवम भावगत स्वनवांश राशि पर	**"धातु"** (सोना चाँदी इत्यादि)
(२) अन्य के नवांश में हो	लग्न-पंचम या नवम भावगत स्वनवांश राशि पर	**"जीव"** (मनुष्य-पशु-पक्षी)
(३) अन्य के नवांश में हो	लग्न-पञ्चम या नवम भावगत अन्य ग्रह की नवांश राशि पर	**"मूल"** (वृक्ष-तृण-फलादि)

विशेष—धातु दो प्रकार के माने गये हैं। (१) धाम्य अर्थात सोना चाँदी, (२) अधाम्य अर्थात मृत्तिकादि। ग्रह और लग्न के नवमांशानुसार धातु का विचार करना चाहिए। यदि नवमांश में चर राशि हो तो धाम्य धातु, स्थिर राशि हो तो अधाम्य धातु और द्विस्वभाव राशि हो तो धाम्य-अधाम्य दोनों समझना चाहिए।

जीव के तीन प्रकार हैं—(१) द्विपद = देव-मनुष्य-पक्षी, (२) चतुष्पद = पशु-वाहन, (३) सरीसृप = रेंगने वाले जीव। ग्रह और लग्न

के नवमांशानुसार जीव का भी विचार करना चाहिए। यदि लग्न या ग्रह के नवमांश में मिथुन-कन्या-तुला-धनु पूर्वार्द्ध या कुम्भ राशि हो तो द्विपद।

मेष-वृष-सिंह-धनु उत्तरार्द्ध हो तो चतुष्पद, और कर्क-वृश्चिक-मकर या मीन राशि हो तो सरीसृप समझना चाहिए।

मूल का एक ही प्रकार है--वृक्षादि से लेकर तृणपर्यन्त मूल ही कहे जाते हैं।

यदि नवमांश में जलचर राशि हो तो जल सम्बन्धीमूल, यदि थलचर राशि हो तो स्थल सम्बन्धि मूल कहना चाहिए ॥ ६ ॥

प्रकारान्तरेणाह—

धातुं मूलं जीवमित्योजराशौ युग्मे विद्यादेतदेव प्रतीपम्।
लग्ने योंऽशस्तत्क्रमाद् गण्य एवं सङ्क्षेपोऽयं विस्तरात्तत्प्रभेदः ॥७॥

भ०—मेषमिथुनसिंहतुलाधनुःकुम्भा ओजराशयः। वृषकर्ककन्या-वृश्चिकमकरमीनाः युग्मराशयः तत्र ओजे विषमे राशौ लग्नगते प्रथमनवांशकोदये धातुं प्रवदेत्। द्वितीये मूल तृतीये जीवं पुनरपि चतुर्थे धातुं पञ्चमे मूलं षष्ठे जीवं पुनः सप्तमे धातुं अष्टमे मूलं नवमे जीवमिति। युग्मे विन्द्यादेतदेव प्रतीपम्। युग्मे युग्मराशौ लग्नगते नवांशकक्रमेणैतदेव पूर्वोक्तं प्रतीपं विपर्ययेण विन्द्यात् जानीयात्। येन प्रथमनवांशकोदये जीवं द्वितीये मूलं तृतीये धातुं, पुनश्चतुर्थे जीवं पञ्चमे मूलं षष्ठे धातुं, पुनः सप्तमे जीवं अष्टमे मूलं नवमे धातुमिति। एवमनेन प्रकारेण क्रमात्परिपाटचा लग्ने विलग्ने योंऽशो यो नवभागस्तत्कालमुदितः स यावद्गण्यो गणनीयः। अत्र च लग्ननवांशकवशात् प्राग्वद्योनिविभागः केचित् द्रेष्काणत्रितये यथासंख्यं धातुं मूलं जीवमित्योजराशौ युग्मे विन्द्यादेतदेव प्रतीपमि'ति वर्णयन्ति। तच्चायुक्तम्। यस्मात्पुरस्तादाचार्य एवं वक्ष्यति। अंशकाज्ज्ञायते

द्रव्यमिति। अयं संक्षेपः समास उक्तः विस्तरात् व्यासेनास्यैवार्थस्य प्रभेदः स्पष्टतया अभिधीयत इति॥ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायां षट्पञ्चाशिकायां होराविवृतौ संक्षेपाद् होराध्यायः प्रथमः॥ १॥

वा०--विषम राशि प्रश्न लग्न में हो और लग्न का यदि पहला, चौथा या सातवाँ नवांश हो तो "धातु" सम्बन्धी दूसरा-पाँचवाँ या आठवाँ हो तो "मूल" सम्बन्धी, तीसरा-छठा या नौवाँ हो तो "जीव" सम्बन्धी प्रश्न समझना चाहिए।

समराशि प्रश्न लग्न में हो और पहला-चौथा या सातवाँ नवांश हो तो "जीव" सम्बन्धी, दूसरा-पाचवाँ-या आठवाँ नवांश हो तो "मूल" सम्बन्धी, तीसरा-छठा या नौवा नवांश हो तो "धातु" सम्बन्धी प्रश्न समझना चाहिए। स्पष्टार्थ चक्र देखें।

विषम राशि चक्र

प्रश्न लग्न						अंश	कला	वर्ग
मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कुं.	३	२०	धातु
मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कु.	६	४०	मूल
मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कु.	१०	०	जीव
मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कु.	१३	२०	धातु
मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कु.	१६	४०	मूल
मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कु.	२०	०	जीव
मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कु.	२३	२०	धातु
मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कु.	२६	४०	मूल
मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कु.	३०	०	जीव

सम राशि चक्र

प्रश्न लग्न						अंश	कला	वर्ग
वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मीन	३	२०	जीव
वृ	क.	क.	वृ.	म.	मी.	६	४०	मूल
वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.	१०	०	धातु
वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.	१३	२०	जीव
वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.	१६	४०	मूल
वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.	२०	०	धातु
वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.	२३	२०	जीव
वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.	२६	४०	मूल
वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.	३०	०	धातु

"वागीश्वरी" हिन्दो टीका सहित षट्पंचाशिका में
होराध्याय प्रथम ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः—२

गमागमाध्यायो व्याख्यायते । तत्रादावेव स्थानगमागम
जीवितमरणरोगशान्तिपराभिभवज्ञानमाह—

वृषसिंहवृश्चिकघटैर्विद्धि स्थानं गमागमौ न स्तः ।
न मृतं न चापि नष्टं न रोगशान्तिर्न चाभिभवः ॥ १ ॥

भ०—वृषसिंहवृश्चिकाः प्रसिद्धाः घटः कुम्भः एते स्थिरराशयः । एतैर्वृषसिंहवृश्चिकघटैः एतेषामन्यतमे लग्नं प्राप्ते स्थानं विद्धि जानीहि, प्रष्टुः स्थानलाभो भवति । गमागमौ न स्तः गमश्चागमश्च गमागमौ तौ न स्तः न भवतः । न मृतं मरणं न भवति जीवत्येव । न चापि नष्टं धात्वादिद्रव्यं धनम् अदर्शनपथि स्थितं न नष्टं न नाशं प्राप्तम् । अथवा विदेशस्थो नरस्तस्मात्स्थानान्न नष्टः । न रोगशान्तिः रोगी ज्वरादिस्तस्य शान्तिः शमनं व्याध्यभिभूतस्य न भवति । न चाभिभवः अभिभवः पराजयः स शत्रोः सकाशान्न भवति ॥ १ ॥

वा०—यदि प्रश्न लग्न (वृ. सि. वृ. कु.) स्थिर राशि का हो तो स्थान लाभ विषयक प्रश्न मे स्थान लाभ हो, गमनागमन में कुछ नही हो, रोगी विषयक प्रश्न में रोगी की मृत्यु नही हो, नष्टवस्तु में वस्तु की प्राप्ति हो, रोगी विषयक हो तो रोग शान्त नही हो, जय पराजय में पराजय नही हो तथा प्रवासी विषयक प्रश्न में प्रवासी स्थिर है ऐसा समझना चाहिए ॥ १ ॥

विशेषमाह—

तद्विपरीतं तु चरैर्द्विशरीरैर्मिश्रितं भवति ।
लग्नेन्द्वोर्वक्तव्यं शुभदृष्ट्या शोभनमतोऽन्यत् ॥ २ ॥

भ०—चराः मेष-कर्कट-तुला-मकराः तदित्यनेनानन्तरोक्तं विद्धि स्थानमित्यादिकं सर्वं प्रत्यवमृष्यते । चरैः चराभिधानैः पृच्छालग्न-

स्थैस्तत्फलमनन्तरोक्तं विपरीतं विपर्ययाद्भवति (पूर्वमुक्तं विद्धि स्थानमिति)। तत्र चरैः स्थानप्राप्तिर्नास्तीति वाच्यम्। (गमाऽऽगमौ न स्त इति पूर्वमुक्तं) चरैर्गमाऽऽगमौ विद्येते। (पूर्वमुक्तं न मृतः) चरैर्मृत इति वक्तव्यम्। (पूर्वमुक्तं न चाऽपि न नष्टं) चरैर्नष्टमिति वाच्यम् (पूर्वमुक्तं न रोगशान्ति) चरैः रोगशान्तिर्भवतीति वाच्यम्। (पूर्वमुक्तं न चाभिभवः) चरैरभिभवो भवतीति वक्तव्यम्। द्विशरीरैर्मिश्रितं फलं भवति, इति। द्विशरीराः द्विस्वभावाः मिथुन-कन्या-धन्वि-मीनाः तैः पृच्छालग्ने मिश्रितं फलं भवति। यत् स्थिरैरुक्तं यच्चरैरुक्तं तन्मिश्रितमुभयं फलं भवति। भवति न भवतीति वा सर्वमेतद्यथोद्दिष्टम्। तत्राऽयं निश्चयः द्विस्वभावलग्ने प्रथमेऽर्धे स्थिरवत्फलं सर्वं वदेत् द्वितीयेऽर्धे चरवत्। यतस्तस्य प्रथमार्धस्थिरसमीपवर्ति द्वितीयं चरसमीपवर्तीति। तथाचास्मदीये प्रश्नज्ञाने—

"स्थिरराशौ लग्नगते स्थानप्राप्ति वदेन्न चाऽऽगमनम्।
रोगोपशमो नाशः द्रव्याणां स्यात्पराभवो नाऽत्र॥
चरराशौ विपरीतं मिश्रं वाच्यं द्विमूर्त्युदये।
स्थिरवत्प्रथमेऽर्धे स्यादपरे चरराशिवत्सर्वं" मिति॥

लग्नेन्द्वोर्वक्तव्यमिति। लग्नं प्रश्नलग्नम् इन्दुश्चन्द्रस्तयोर्लग्नेन्द्वोर्द्वयोरपि शुभदृष्टया सौम्यग्रहदर्शनेन शोभनं फलं वक्तव्यम्। देहमनोरूपत्वात् लग्नेन्दू सौम्यदृष्टौ सम्पत्करौ भवतः। अतोऽन्यदिति अतोंऽस्मादुक्ताद्विपरीतेऽन्यदशुभं वक्तव्यम्। तेन लग्नेन्दू पापदृष्टौ यदि भवतस्तदा सर्वपृच्छास्वशोभन फलं वक्तव्यम्। अथदिकैकस्मिन्नुभयदृष्टे मध्यमं फलं भवति॥ २॥

वा०—यदि प्रश्न लग्न (मे. क. क. म.) चर राशि का हो तो उपरोक्त फल से विपरीत फल होता है। अर्थात् गमनागमन हो, रोगी की मृत्यु हो, नष्ट- वस्तु नही प्राप्त हो इत्यादि।

यदि प्रश्नलग्न (मि. क. ध. मी.) द्विस्वभाव- राशि का हो तो

मिश्रित फल होता है। अर्थात द्विस्वभाव राशि में चर-स्थिर दोनों के गुण होते हैं। यदि द्विस्वभावराशि के प्रथमार्द्ध में लग्न हो तो स्थिर राशि का मध्यम फल और यदि द्वितीयार्द्ध में हो तो चर राशि का मध्यम फल समझना चाहिए।

यदि प्रश्न काल में लग्न और चन्द्रमा से शुभग्रह की युति या दृष्टि हो तो प्रश्नकर्त्ता के लिए शुभकारक होता है, यदि पाप ग्रह की युति या दृष्टि हो तो अशुभ कारक होता है। यदि मिश्रित योग हो अर्थात एक के साथ शुभग्रह और एक के साथ पापग्रह की युति या दृष्टि हो तो मिश्रित (मध्यम) फल होता है॥ २॥

प्रश्न लग्न		स्थान लाभ	गमनागमन	रोगी का जीवन-मरण	नष्ट वस्तु लाभालाभ	रोग शान्ति	जय पराजय	प्रवासी
चर मे. क. तु. म.		होता है	होता है	मरण होता है	नहीं प्राप्त होता है	होता है	होता है	चलायमान होता है
स्थिर वृ. सि. वृ. कु.		नहीं होता है	नहीं होता है	जिवित रहता है	प्राप्त होता है	नहीं होता है	नहीं होता है	स्थिर रहता है
द्विष्व. मि.क. ध.मी.	प्रथमार्द्ध	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
	द्वितीयार्द्ध	होता है	होता है	मरण होता है	नहीं प्राप्त है	होता है	होता है	चलायमान

शत्रोर्मार्गनिवृत्तिज्ञानमाह—

सुतशत्रुगतैः पापैः शत्रुर्मार्गान्निवर्तते।
चतुर्थगैरपि प्राप्तः शत्रुर्भग्नो निवर्तते॥ ३॥

भ०—सुतश्च शत्रुश्च सुतशत्रू अनयोर्गतैः सुतस्थानं पञ्चमं, रिपुस्थानं षष्ठम्, अनयोर्द्वयोरपि स्थानयोः एकस्मिन्वा पापैः सूर्यभौमशनिभिः प्रश्नलग्नाद्गतैः समवस्थितैः प्रष्टुः शत्रुः रिपुर्मार्गात्पथो

निवर्तते गच्छति। तैरेव पापैः लग्नाच्चतुर्थस्थाने समवस्थितैः अपि शब्दः सम्भावनायां प्राप्तोऽपि शत्रुनिकटस्थो भग्नः पराजितो निवर्तते प्रतीपं गच्छतीत्यर्थः ॥ ३ ॥

वा०—शत्रु गमनागमन सम्बन्धी प्रश्न में यदि प्रश्नलग्न से पाँचवे या ६ ठे स्थान में पापग्रह (सू. भौ. या श.) हों तो आता हुआ शत्रु मार्ग से लौट जाता है। यदि यहीं पापग्रह चतुर्थस्थान में रहें तो शत्रु युद्ध में पराजित हो कर लौट जाता है ॥ ३ ॥

शत्रु के मार्ग से लौटने का योग

युद्ध में पराजित हो लौटने का योग
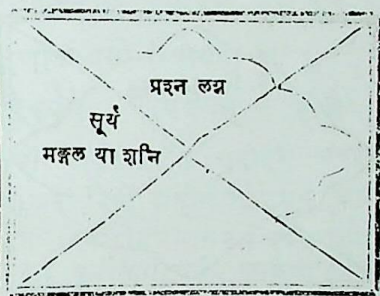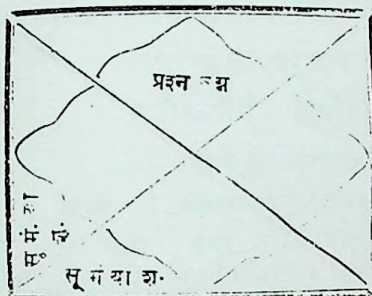
योगान्तरमाह—

झषालिकुम्भकर्कटा रसातले यदा स्थिताः।
रिपोः पराजयस्तदा चतुष्पदैः पलायनम् ॥ ४ ॥

भ०—झषो मीनः अलिर्वृश्चिकः कुम्भ-कर्कटौ प्रसिद्धौ एते रसातले लग्नाच्चतुर्थस्थाने स्थिताः एतेषामन्यतमः प्रश्नलग्नाच्चतुर्थस्थाने यदा समवस्थितो भवति तदा रिपोः शत्रोः पराजयोऽभिभवो भवति। चतुष्पदैः पलायतनमिति। मेष-वृष-सिंह-धन्विपरार्धाश्चतुष्पदाः। एतेषामन्यतमे लग्नाच्चतुर्थस्थे शत्रोः पलायनमपसर्पणं भवतीत्यर्थः ॥ ४ ॥

वा०—प्रश्नलग्न से चतुर्थ स्थान में यदि मीन-वृश्चिक-कुम्भ या कर्क

राशि हो तो शत्रु की पराजय होती है। तथा यदि (मेष-वृष-सिंह) चतुष्पद राशि हो तो शत्रु पलायित होता है। ॥ ४ ॥

विशेष—प्रश्नलग्न यदि धनु-सिंह-वृश्चिक या मेष राशि हो तो शत्रु की पराजय होती है तथा यदि मकर-कुम्भ या वृष राशि हो तो शत्रु पलायित होता है।

तात्पर्य यह कि प्रश्नलग्न यदि मेष-वृष-सिंह-वृश्चिक-धनु-मकर या कुम्भ राशि हो तो शत्रु पराजित होता है या भाग जाता है।

शत्रु के पराजित होने का योग

पलायित (भागने) होने का योग
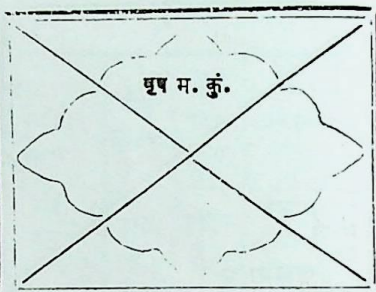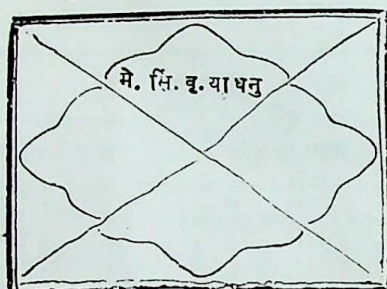
यायिनां शुभाशुभमाह—

चरोदये शुभः स्थितः शुभं करोति यायिनाम् ।
अशोभनैरशोभनं स्थिरोदयेऽपि वा शुभम् ॥ ५ ॥

भ०—चरोदये चरराश्युद्गमे तस्मिंश्च शुभग्रहाणां बुधजीवशुक्राणां अन्यतमः स्थितश्चेत् यायिनां गच्छतां शुभं श्रेयः करोति विदधाति तस्मिन्नेव चरोदये अशोभनैः स्थितैः पापग्रहाणां रविभौमार्कजानामन्यतमे स्थिते तेषामेव यायिनामशोभनमश्रेयः करोति। स्थिरोदयेऽपि वा शुभम्। स्थिराणामन्यतमस्योदये पापसंयुक्ते विकल्पेन शुभं भवति। तत्स्थानं पापग्रहस्य स्वक्षेत्रं उच्चं मूलत्रिकोणं मित्रक्षेत्रं वा भवति तदा शुभमन्यथा न शुभमित्यर्थः। केचित्

स्थिरेऽष्टमेऽपि वा शुभमिति पठन्ति। स्थिरराशौ लग्नाष्टमगापसंयुक्ते वा शुभं प्राग्वदिति ॥ ५ ॥

वा०—प्रश्नलग्न में चर राशि (मे. क. तु. म.) हो और उस में शुभग्रह (बु. गु. या शु.) हो तो पहले चढ़ाई करनेवाले (यायी) की विजय होती है, यदि पापग्रह (सू. मं. श.) हों तो पराजय होती है। प्रश्नलग्न यदि उस पाप ग्रह का स्वक्षेत्र-मित्रक्षेत्र-स्वोच्च या मूल त्रिकोण आदि हो तो यायी को शुभफलदायक होता है। यदि स्थिर राशि (वृ. सि. वृ. कु.) प्रश्नलग्न में हो और पापग्रह से युक्त हो तो (यायी) के लिए शुभ दायक होता है ॥५॥

शत्रोर्गमाऽऽगमज्ञानमाह—

स्थिरे शशी चरोदये न चाऽऽगमो रिपोर्यदा।
तदाऽऽगमं रिपोर्वदेद्विपर्यये विपर्ययम् ॥ ६ ॥

भ०—स्थिरे स्थिरराशौ शशी चन्द्रो भवति चरोदये चरराशौ लग्ने गते प्रश्नलग्नगते प्रश्नकाले यदा रिपोः शत्रोर्न चाऽऽगमः आगमो न विद्यते तदा तस्मिन्नेव प्रश्ने रिपोरागममागमनं वदेद् ब्रूयात्। विपर्यये विपर्ययमिति। अस्मादेव पूर्वोक्ताद्विपर्यये अन्यथा विपर्यये विपरीतमेव वक्तव्यम्। एतदुक्तं भवति। चरे शशिनि स्थिरराशौ लग्नगते यदि रिपोरागमनं श्रूयते तदा तस्मिन् प्रश्ने नागच्छतीति वदेत् ॥ ६ ॥

वा०—प्रश्न लग्न में चर राशि (मे. क. तु. म.) हो और चन्द्रमा स्थिर राशि में हो तो नहीं आनेवाला शत्रु भी शीघ्र आता है। यदि प्रश्नलग्न स्थिर राशि (वृष सि. वृ. कु.) का हो और चन्द्रमा चर राशि में हो तो मार्ग में आया हुआ शत्रु भी लौट जाता है ॥ ६ ॥

शत्रु गमनागमन चक्र

चर राशि (मे. क. तु. म.)	स्थिर राशि (वृ. सि. कु.)	फल
प्रश्न लग्न या	चन्द्रमा	नही आनेवाला शत्रु भी आवे
चन्द्रमा	प्रश्नलग्न	मार्ग में आया शत्रु भी लौट जाये।

अथ शत्रुनिवृत्तिज्ञानमाह—

स्थिरे तु लग्नमागते द्विरात्मके तु चन्द्रमाः ।
निवर्तते रिपुस्तदा सुदूरमागतोऽपि सन् ॥ ७ ॥

भ०—स्थिरराशौ लग्नमागते तत्काललग्नं प्राप्ते, द्विरात्मके द्विस्वभावे राशौ यदा चन्द्रमा शशी भवति तदा रिपुः शत्रुः सुदूरमागतोऽपि सन् स्वस्थानात्सुतरां दूरमागतोऽपि निवर्तते प्रतीपं गच्छतीति । अपिशब्दः सम्भावनायाम् ॥ ७ ॥

वा० —प्रश्नलग्न में स्थिर राशि हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव राशि का हो तो समीप में आया शत्रु भी पीछे लौट जाता है ॥ ७ ॥

योगान्तरमाह—

चरे शशी लग्नगतो द्विदेहः पथोऽर्धमागत्य निवर्तते रिपुः ।
विपर्यये चाऽऽगमनं द्विधा स्यात्पराजयः स्यादशुभेक्षिते तु ॥८॥

भ०—चरे चरराशौ शशी चन्द्रमा भवति तथा लग्नगतः प्राग्लग्नस्थो द्विदेहो द्विस्वभावो राशिर्यदा तस्मिन्काले पथो मार्गस्यार्धमागत्य निवर्तते प्रतीपं गच्छति । तुशब्दोऽवधारणे । विपर्यय इति । विपरीते शत्रोरागमनं द्विप्रकारेण स्याद्भवेत् । एतदुक्तं भवति । द्विस्वभावराशिस्थे शशिनि चरराशौ लग्नगते शत्रोरागमनं बलवन्न भवेत् । पराजयः स्यादशुभक्षिते त्विति । तस्मिन्नत्र विपरीते योगे विपरीते चन्द्रलग्ने वाऽशुभेक्षिते पापग्रहसन्दृष्टे शत्रोः सकाशात्प्रष्टुः पराजयोऽभिभवः स्याद्भवेत् । एतदुक्तं भवति । द्विस्वभावराशिस्थिते शशिनि चरराशौ लग्नगते द्वयोरपि पापदृष्ट्या शत्रोरागमनं द्विधा भवति समागमश्च पराजयं करोतीत्यर्थः ॥ ८ ॥

वा० - प्रश्नलग्न में द्विस्वभाव राशि हो और चन्द्रमा चर राशि का हो तो आधे मार्ग में आया हुआ शत्रु भी पीछे लौट जाता है । इसके विपरीत यदि प्रश्नलग्न मे चर राशि और चन्द्रमा द्विस्वभाव राशि का हो तो शत्रु

का आगमन दो दिशाओं से होता है। इन दोनों योगों में लग्न या चन्द्रमा से यदि पापग्रह की युति या दृष्टि हो तो शत्रु से सन्धि होती है ॥ ८ ॥

प्रश्नलग्न	चन्द्रमा	युति-दृष्टि	फल
चर राशि	स्थिर राशि	×	नही आनेवाला शत्रु भी आवे।
स्थिर राशि	चर राशि	×	मार्ग में आया शत्रु भी लौट जाये।
स्थिर राशि	द्विस्वभाव राशि	×	समीप में आकर भी लौट जाये।
द्विस्वभाव राशि	चरराशि	×	आधे मार्ग में आकर लौट जाये।
चरराशि	द्विस्वभावराशि	×	शत्रु का आगमन दो तरफ से हो।
द्विस्वभावराशि	चरराशि	पापग्रह	शत्रु से सन्धि या पराजय हो।
चरराशि	द्विस्वभावराशि	पापग्रह	,, ,, ,,

अन्यदपि गमागमावाह—

अर्काऽऽर्किज्ञसितानामेकोऽपि चरोदये यदा भवति।
प्रवदेत्तदाऽऽशु गमनं वक्रगतैर्नेति वक्तव्यम् ॥ ९ ॥

भ०—अर्कः आदित्यः आर्किः सौरिः ज्ञः बुधः सितः शुक्रः एषां मध्ये एकोऽपि ग्रहो यदा चरोदये चरराशौ लग्नगते स्थितो भवति तदा आशु क्षिप्रमेव यियासोर्गमनं प्रवदेद् ब्रूयात्। रविवर्ज्यमन्येषामकतमोऽपि यदा चरराशौ लग्नगतो भवति स च वक्रगतिः प्रतीपगतिमाश्रितो भवति तदा यियासोर्गमनं नेति वक्तव्यं याता न गच्छतीत्यर्थः ॥ ९ ॥

वा०—प्रश्नलग्न में चर राशि हो और उसमें सू. श. बु. या शु. इनमें से कोई भी ग्रह रहे तो यायी (चढ़ाई करने वाले) का गमन (परावर्तन) शीघ्र ही होता है। यदि वही ग्रह वक्री हो तो गमन (परावर्तन) नहीं होता है ॥ ९ ॥

स्थिरोदये जीवशनैश्चरेक्षिते गमाऽऽगमौ नैव वदेत्तु पृच्छतः।
त्रि-पञ्च-षष्ठा रिपुसङ्गमाय पापाश्चतुर्था विनिवर्तनाय ॥ १० ॥

भ०—स्थिरराशौ लग्नगते तस्मिंश्च जीवशनैश्चरेक्षिते बृहस्पति-

सौरिभ्यां दृष्टे पृच्छतः प्रष्टुः गमाऽऽगमौ नैव वदेत ब्रूयात्, शत्रु गमाऽऽगमौ नैव भवतः इत्यर्थः। तस्मिन्नेव जीवशनैश्चरेक्षिते पापाः पापग्रहाः त्रिपञ्चषष्ठास्तृतीयपञ्चमषष्ठस्थानस्था भवन्ति तदा रिपोः शत्रोः सङ्गमाय भवन्ति, प्रष्टुः शत्रुणा सह संयोगो भवतीत्यर्थः। अस्मिन्नेव पूर्वोक्तयोगे पापा अशुभग्रहाः चतुर्थाश्चतुर्थस्थानस्थास्तस्यैव शत्रोर्विनिवर्तनाय प्रतीपगमनाय भवन्ति शत्रुर्विनिवर्तत इत्यर्थः॥ १०॥

वा०—प्रश्न लग्न में स्थिर राशि हो और उसपर गुरु या शनि की दृष्टि हो तो प्रश्नकर्त्ता के शत्रु का गमन या आगमन कुछ भी नहीं होता है। इसी योग में यदि पंचम-षष्ठ या तृतीय स्थान में पापग्रह हों तो शत्रु से समागम अवश्य होता है अर्थात युद्ध होता है। यदि पूर्वोक्त योगों से चतुर्थ स्थान में पाप ग्रह रहें तो शत्रु लौट जाता है॥ १०॥

प्रश्नलग्न	दृष्टि-युति	फल
चरराशि	सू.बु.शु. अथवा शनि की	शत्रु का परावर्तन हो।
,,	सू.बु.शु. या श. वक्री हो	,, ,, नही हो।
स्थिरराशि	गुरु या शनि	शत्रु का गमन आगमन नही हो।
,,	गु.या.श. की दृष्टि-युति हो परन्तु पंचम-षष्ठ या तृतीय में पापग्रह हों	शत्रु समागम (युद्ध) हो।
,,	गु. या शनि की दृष्टि हो और चतुर्थ में पापग्रह हों	शत्रु लौट जाये।

अन्यद्गमनाऽऽगमनाय योगमाह—

नाऽऽगच्छति परचक्रं यदाऽऽर्कचन्द्रौ चतुर्थभवनस्थौ।
बुधगुरुशुक्रा हिबुके यदा तदा शीघ्रमायाति॥ ११॥

भ०—अर्कः आदित्यः चन्द्रः शशी तौ लग्नाद्यदा चतुर्थभवनस्थौ चतुर्थस्थानगतौ भवतः तदा परचक्रं नाऽऽगच्छति शत्रुसमूहो नाऽऽया-

तीत्यर्थः। बुध-गुरु-शुक्राः हिबुके चतुर्थस्थाने यदा स्थिता भवन्ति तदा परचक्रं शीघ्रमाशु आयातीत्यर्थः ॥ ११ ॥

बा०—प्रश्नलग्न से सूर्य-चन्द्र यदि चतुर्थ स्थान में हों तो शत्रु की सेना नहीं आती है। यदि चतुर्थ में बु.गु.शु. हों तो शत्रु सेना शीघ्र ही आती है ॥ ११ ॥

शत्रु सैन्य नहीं आवे

शत्रु सैन्य शीघ्र आवे
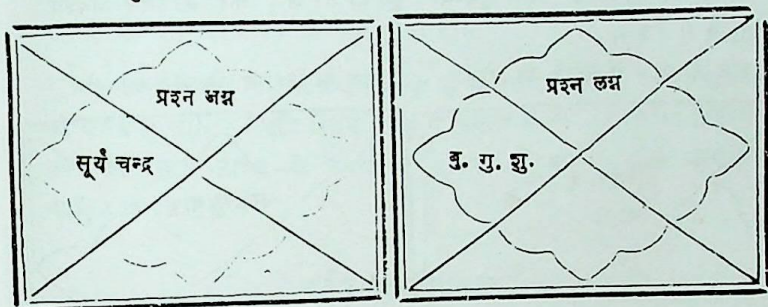
योगान्तरमाह—

मेषधनुःसिंहवृषा यद्युदयस्था भवन्ति हिबुके वा।
शत्रुर्निवर्तते ते ग्रहसहिता वा वियुक्ता वा ॥ १२ ॥

भ०—एषां मेषधनुःसिंहवृषाणां मध्ये यद्येकतम उदयस्थस्तत्काल-लग्नगतो भवति, वा इत्यथवा तात्कालिकात् प्रश्नलग्नाद्धिबुके चतुर्थ-स्थाने एषां मध्यादन्यतमो भवति, ते च ग्रहैः सहिताः समेता रहिता वा तदा तस्मिन्नेव काले शत्रुर्निवर्तते प्रतीपं गच्छतीत्यर्थः ॥ १२ ॥

बा०—प्रश्न लग्न में या चतुर्थ स्थान में कोई भी ग्रह हो और मे. वृ. सिं. या धनु राशि हो तो शत्रु रास्ते से ही लौट जाता है ॥ १२ ॥

अन्यच्छत्रोरनागमनप्रकारमाह—

स्थिरराशौ यद्युदये शनिर्गुरुर्वा स्थितिस्तदा शत्रोः।
उदये रविर्गुरुर्वा चरराशौ स्यात्तदाऽऽगमनम् ॥ १३ ॥

भ०—उदये तत्काललग्ने स्थिरराशौ तत्रैव शनिः सौरिः गुरुः जीवो वा भवति तदा शत्रुः रिपुः स्वस्थानाच्चलितः तत्रैव तिष्ठति। अथवा चरराशौ लग्नगते तत्र च रविर्गुरुर्वा भवति तदा शत्रोरागमनं आगमः स्याद्भवेत् ॥ १३ ॥

वा०—प्रश्न लग्न में स्थिर राशि हो और उसमें शनि या गुरु हों तो अपने स्थान से चला हुआ शत्रु मार्ग में ही रुक जाता है। यदि प्रश्न लग्न में चर राशि हो और उसमें सूर्य या गुरु हों तो शत्रु का आगमन अवश्य होता है ॥ १३ ॥

शत्रु के मार्ग में रुकने का योग शत्रु के निश्चय ही आने का योग
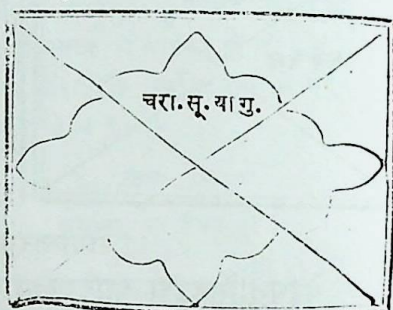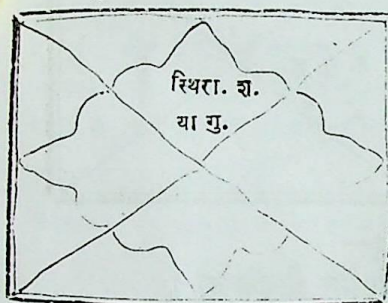
यातुर्निवृत्तिज्ञानार्थं योगं श्लोकद्वयेनाह—

ग्रहः सर्वोत्तमबलो लग्नाद्यस्मिन्गृहे स्थितः।
मासैस्तत्तुल्यसंख्याकैर्निवृत्तिं यातुरादिशेत् ॥ १४ ॥
चरांशस्थे ग्रहे तस्मिन्कालमेवं विनिर्दिशेत्।
द्विगुणं स्थिरभागस्थे त्रिगुणं द्व्यात्मकांशके ॥ १५ ॥

भ०—सर्वोत्तमबलो ग्रहः लग्नाद्यस्मिन्गृहे यावत्तमे स्थाने स्थितः सर्वेषामुत्तमबलः प्रधानबलोपेतः तत्तुल्यसङ्ख्याकैस्तत्तुल्या तत्तत्समा सङ्ख्याप्रमाणं येषां मासानां तैः यातुः जिगमिषोः निवृत्तिं निवर्त्तन प्रवासान्निर्दिशेद्वदेत् ॥ १४ ॥

चरांशस्थ इति । तस्मिन्सर्वोत्तमबले ग्रहे चरांशस्थे चरराशिनव भागस्थे पूर्वोक्तकालमेव विनिर्दिशेत् । तत्तुल्यङ्ख्याकैर्मासैः स्थिरभागांशकस्थे स्थिरनवांशस्थे तमेव कालं द्विगुणं, द्व्यात्मकांशके द्विस्वभावनवांशके तमेव कालं त्रिगुणं वदेत् ॥ १५ ॥

वा०—प्रश्न कुण्डली में जो सर्वाधिक बली ग्रह हो (स्वगृही·स्वोच्च या मित्र गृही) वह जिस भाव में रहे उतने संख्यक महीनों में यायी अथवा घर से गये हुए व्यक्ति का आगमन होता है ।

कुण्डली में बली ग्रह यदि चर राशि के नवांश में हो तो उपरोक्त काल को समझना चाहिए । यदि स्थिर राशि के नवांश में हो तो उसका द्विगुणित तया द्विस्वभाव राशि के नवांश में हो तो उसका त्रिगुणित समझना चाहिए ॥ १४-१५ ॥

अत्रैव मतान्तरमाह—

यातुर्विलग्नाज्जामित्रभवनाधिपतिर्यदा ।
करोति वक्रमावृत्तेः कालं तं ब्रुवतेऽपरे ॥ १६ ॥

भ०—विलग्नं पृच्छालग्नं तस्माज्जामित्रभवनं सप्तमस्थानं तस्याधिपतिः स्वामी स यदा यस्मिन्काले वक्रं विपरीतं गमनं करोति तं कालं यातुर्जिगमिषोरावृत्तेरावर्तनस्य प्रवासान्निवृत्तिर्भवति । अपरे आचार्याः कृष्णादयो ब्रुवते कथयन्ति । वक्रं च ग्रहाणां यथासम्भवं योज्यम् । तथा च यातुः पृच्छालग्नात्सप्तमभवनाधिपो यदा वक्री भवति तदा वक्तव्यः प्रवासनिवृत्तयेकालः ॥ १६ ॥

वा०—कृष्णादि आचार्यों का मत है कि प्रश्नलग्न से सप्तमभाव का स्वामी जब वक्री होता है तब परदेशी अथवा शत्रु का आगमन होता है । अर्थात् प्रश्न कुण्डली का सप्तमेश जब वक्री हो तभी शत्रु का या प्रवासी का वापस लौटना होता है ॥ १६ ॥

शत्रोरागमने दिनप्रमाणमाह—

उदयर्क्षाच्चन्द्रर्क्षं भवति च यावद्दिनानि तावद्भिः ।
आगमनं स्याच्छत्रोर्यदि मध्ये न ग्रहः कश्चित् ॥ १७ ॥

भ०—उदयर्क्षमुदयलग्नं चन्द्रर्क्षं चन्द्रराशिः पृच्छाकाले यत्र चन्द्रमाः स्थितस्तस्मादुदयर्क्षाच्चन्द्रर्क्षं यावत्सङ्ख्यं भवति तावत्संख्यैर्दिनैः शत्रोरागमनं स्यात् । यदि मध्य इति । तयोर्लग्नचन्द्रयोर्मध्येऽन्तरे यदि कश्चिद् ग्रहो न भवति तदैवं ग्रहसम्भवे शत्रुरवश्यमेव नाऽऽयातीत्यर्थः ॥ १७ ॥

इति वराहमिहिरात्मजदैवज्ञपृथुयशोविरचितायां षट्पञ्चाशिकायां गमागमो द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥

वा०—प्रश्न लग्न की राशि से चन्द्र की राशि तक अथवा लग्नगत नक्षत्र से चान्द्र नक्षत्र तक जो संख्या हो उतने ही दिनों में प्रवासी या शत्रु का आगमन समझना चाहिए । यदि प्रश्न लग्न और चन्द्रमा की राशि या नक्षत्र के मध्य में कोई ग्रह रहे तो यह योग नहीं घटता हैं, अर्थात शत्रु या प्रवासी का आगमन नहीं होगा ऐसा समझना चाहिए ॥ १७ ॥

विशेष—इस अध्याय में शत्रु के गमनागमन विषय में जो योग कहे गये हैं वे प्रवासी के विषय में भी उपयुक्त समझना चाहिए ।

"वागीश्वरी" हिन्दीटीकासहित षट्पंचाशिका में
गमागमाध्याय द्वितीय ॥ २ ॥

तृतीयोऽध्यायः–३

जयपराजयाध्यायो व्याख्यायते। तत्रादावेव जयपराजयज्ञानमाह—

दशमोदयसप्तमगाः सौम्यानगराधिपस्य विजयकराः।
आरार्की ज्ञगुरुसिताः प्रभङ्गदा विजयदा नवमे ॥ १ ॥

भ०—उदयो लग्नं दशमसप्तमे प्रसिद्धे एतेषु स्थानेषु लग्नात्सौम्याः शुभग्रहाः गताः समवस्थिताः पृच्छालग्ने नगराधिपस्य पुरस्वामिनो राज्ञो विजयकराः विशेषेण जयं कुर्वन्ति। आरो भौमः आर्किः सौरिः एतौ प्रश्नलग्नात् नवमे स्थाने स्थितौ प्रष्टुः प्रभङ्गदौ प्रकर्षेण भङ्गं पलायनं ददतः। तथा ज्ञो बुधः गुरुः जीवः सितः शुक्रः एते लग्नान्नवमे स्थाने स्थिताः विजयदाः विशेषेण जयदा भवन्ति। प्रष्टुः सङ्ग्रामे विजयो भवतीत्यर्थः ॥ १ ॥

वा०—प्रश्न कुण्डली में लग्न स्थान में सातवें में या दशवें स्थान में शुभग्रह बैठे हों तो स्थायी (नगरपति) की विजय होती है, यदि नवमस्थान में शनि-मंगल हों तो स्थायी की पराजय होती है। परन्तु यदि बुध गुरु शुक्र हों तो विजय होती है। अर्थात ये तीनों शुभग्रह प्रश्न लग्न से नवमस्थ रहें तो स्थायी की जीत होती है और यायी भागता है ॥ १ ॥

स्थान	ग्रह	फल
लग्न-सप्तम-दशम	शुभग्रह	स्थायी की विजय
नवम	शनि-मंगल	स्थायी की पराजय
नवम	बुध-गुरु-शुक्र	स्थायी की विजय

नागरयायिनोः कस्य विजयो भवतीत्येतत्परिज्ञानमाह—

पौरास्तृतीयभवनाद्धर्माद्वा यायिनः शुभैः शुभदाः।
व्ययदशमाये पापाः पुरस्य नेष्टाः शुभा यातुः ॥ २ ॥

भ०—पुरे भवाः पौराः नागराः पृच्छालग्नातृतीयभवनप्रभृतिय-द्राशिषट्कमष्टमं स्थानं यावत् तावन्नागरा ज्ञेयाः, एतद्राशिषट्कं पौराणां शुभाशुभत्वे ज्ञेयमित्यर्थः। धर्माद्वा यायिनः धर्मान्नवमस्था-नात्प्रभृतिराशिषट्कं द्वितीयं स्थानं यावत् तावत् स्थिता ज्ञेयाः एतद्राशिषट्कं यायिनां शुभाशुभत्वे ज्ञेयमित्यर्थः। येनादौ यात्राया-मुद्योगः कृतः स यायी, येन पश्चात्कृतः स नागरा वा शब्दोऽत्र चार्थे ज्ञेयः। शुभैः शुभदाः एते यथाविभागकल्पिता राशयो यस्य शुभैः सौम्यग्रहैः संयुक्ता भवन्ति तस्य शुभदा भवन्तीत्यर्थः। अर्थाद्यस्य पापैः संयुक्तास्तस्य पराजयदाः। तथा च प्रश्ने।

धर्माद्ये चक्रदले यायिनो नागरास्तृतीयादौ।
विजयः सौम्ययुते स्यात्पुरभागे क्रूरसंयुते भङ्गः॥

तथा चास्मदीये प्रश्नज्ञाने—

"नवमाद्ये चक्रदले विज्ञेयो यायिनस्तृतीयादौ।
पौराः शुभसंयुक्ता भागे विजयः पुरे भङ्गः॥" इति।

अर्थादेव भागद्वयेऽपि पापसौम्यैर्युक्ते व्यामिश्रं फलं भवति। न जयो न पराजय इति। व्ययदशमाये पापा इति। व्ययं द्वादशं दशमं प्रसिद्धम् आयमेकादशं समाहारे एकवद्भावः तत्र पापाः पापग्रहाः पृच्छालग्नात्समवस्थिता भवन्ति तदा पुरस्य नगरस्य चेष्टाः न शुभा भवन्ति। यातुर्यत्पुरं तस्य न शुभाः, यातुः पुनः शुभकराः उपचयकराः इत्यर्थः॥ २॥

वा०—प्रश्न कुण्डली में तृतीय भाव से अष्टम भाव तक की पौर (स्थायी) संज्ञा है तथा नवम भाव से द्वितीय भाव तक की यायी संज्ञा है।

यदि यायी भाग में अधिक शुभग्रह बली होकर स्थित रहें तो यायी के लिए शुभकारक, यदि स्थायी भाग में अधिक शुभग्रह बली होकर रहें तो स्थायी के लिए शुभकारक होते हैं। यदि दोनों भागों में पाप ग्रह बली होकर रहें तो दोनों (यायी-स्थायी) के लिए अशुभकारक होते हैं। यदि मिश्रित ग्रह (शुभ-पाप) हों तो मिश्रित फल देते हैं॥ २॥
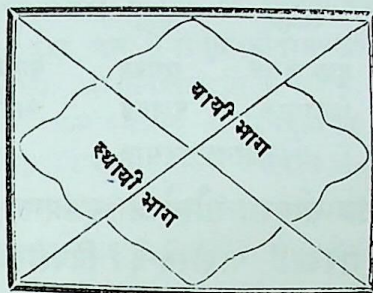
सन्धिविरोधज्ञानार्थं योगान्तरमाह—

नृराशिसंस्था ह्युदये शुभाः स्युर्व्ययायसंस्थाश्च यदा भवन्ति ।
तदाशु सन्धि प्रवदेन्नृपाणां पापैर्द्विदेहोपगतैर्विरोधम् ॥ ३ ॥

भ०—नृराशयः पुरुषराशयः पुरुषाकृतयो राशयः नृराशयः मिथुनकुम्भतुलाकन्याः तथा च आचार्य एव ज्ञापकः-'तुलाऽथ कन्या मिथुनो घटश्च नृराशयः' इति । शुभाः सौम्यग्रहाः बुधशुक्रबृस्पतयः एते उदये पृच्छालग्ने स्थिताः स्युर्भवेयुः अथवा त एव सौम्यग्रहाः नृराशिसंस्था व्ययायसंस्थाश्च भवन्ति, व्ययं द्वादशम् आयमेकादशं च शब्दः समुच्चये अनयोरपि संस्थाः सवस्थिता यदा भवन्ति तदा आशु क्षिप्रमेव नृपाणां सन्धि सन्धानं प्रवदेत् ब्रूयात् । पापैरिति । पापा रविभौमशनिक्षीणचन्द्राः द्विदेहाः द्विस्वभावराशयः पापैरशुभग्रहैः द्विदेहोपगतैर्द्विस्वभावराशिषु समवस्थितैर्नृपाणामेवं विरोधं विग्रहं प्रवदेत् ॥ ३ ॥

वा०—प्रश्न लग्न में यदि पुरुष संज्ञक (तु. मि. कर्क कु. धनु पूर्वार्द्ध) राशि हो और शुभ ग्रह से युक्त हो अथवा पुरुष संज्ञक राशि एकादश या द्वादश भाव में हो और शुभग्रह से युक्त हो ता यायी और स्थायी दोनों में सन्धि हो जाती है । यदि इन स्थानों (११-१२) में द्विस्वभाव (मि. कन्या ध. मी.) राशि हो और उसमें पाप ग्रह हों तो यायी और स्थायी में विरोध बढ़ता है ॥ ३ ॥

स्थान	राशि	युति	फल
१-११-१२	पुरुष संज्ञक	शुभग्रह	यायी-स्थायी में सन्धि
१-११-१२	द्विस्वभाव	पापग्रह	यायी-स्थायी में विरोध

योगान्तरमाह—

केन्द्रोपगताः सौम्याः सौम्यैर्दृष्टा नृलग्नगाः प्रीतिम् ।
कुर्वन्ति पापदृष्टाः पापास्तेष्वेव विपरीतम् ॥ ४ ॥

भ०—केन्द्राणि लग्नचतुर्थसप्तमदशमानि तेषूपगताः समवस्थिताः सौम्याः शुभग्रहाः अथवा त एव सौम्याः नृलग्नगाः नृराशिषु प्रागुक्तेषु स्थिताः सौम्यैः शुभग्रहैश्च दृष्टाः परस्परमवलोकयन्तीत्यर्थः । एवं विधाः प्रीतिं सन्धि कुर्वन्ति निवृत्ति प्रापयन्ति । तेषु केन्द्रेषु समवस्थिताः पापाः ते च पापदृष्टाः परस्परं पापैरवलोकिताः विपरीतं विपर्ययमप्रीतिं विग्रहं कुर्वन्ति ॥ ४ ॥

बा०—पुरुष संज्ञक राशि में या केन्द्र स्थान (१-४-६-१०) में शुभ ग्रह हो और शुभग्रह से ही दृष्ट हों तो यायी और स्थायी में सन्धि होती है । इन स्थानों में यदि पापग्रह हों और पापग्रह से ही दृष्ट हों तो दोनों में विरोध बढ़ता है ॥ ४ ॥

स्थान	ग्रह	दृष्टि	फल
केन्द्र (१-४-७-१०) में	शुभग्रह	शुभग्रह की	यायी स्थायी में संधि
,,	पापग्रह	पापग्रह की	यायी स्थायी में बिरोध
पुरुषराशि में	शुभग्रह	शुभग्रह की	यायी स्थायी में संधि
,,	पापग्रह	पापग्रह की	यायी स्थायी में विरोध

सेनाऽऽगमनज्ञानमाह—

द्वितीये वा तृतीये वा गुरुशुक्रौ यदा तदा ।
आश्वेवाऽऽगच्छति सेना प्रवासी च न संशयः ॥ ५ ॥

भ०—प्रश्नलग्नाद्यदा द्वितीये वा तृतीये यथा तथा गुरुशुक्रौ जीवसितौ भवतः तदा 'चमूः सेना आश्वेवागच्छति क्षिप्रमेवायाति। प्रवासी अन्यदेशस्थः आश्वेवागच्छति न संशयः। निर्विकल्पं यथा स्यात्तथा ग्रहाणां क्रमविवक्षार्थं कदाचिद्द्वावेव द्वितीये वा द्वावेव तृतीये वा एको द्वितीये वा तृतीयेऽप्येक एवेति ॥ ५ ॥

इति वराहमिहिरात्मजदैवज्ञपृथुयशोविरचितायां षट्पञ्चाशिकायाँ जयपराजयाध्यायस्तृतीयः समाप्तः ॥ ३ ॥

वा०—प्रश्नलग्न से द्वितीय या तृतीय भाव में गुरु या शुक्र अथवा दोनो हों तो यायी या प्रवासी निःसन्देह शीघ्र ही आते हैं ॥ ५ ॥

विशेष—इस अध्याय का उपयोग वाद-विवाद (मुकदमा) यायी-स्थायी (मुद्दई-मुद्दालह) इत्यादि के जयपराजय के विषय में किया जाता है।

"वागीश्वरी" हिन्दीटीकासहित षट्पंचाशिका में जयपराजयाऽध्याय तृतीय ॥ ३ ॥

चतुर्थोऽध्यायः-४

शुभाशुभलक्षणाध्यायो व्याख्यायते । तत्रादावेव
प्रष्टुः शुभाशुभ ज्ञानमाह—

केन्द्रत्रिकोणेषु शुभान्वितेषु पापेषु केन्द्राष्टमवर्जितेषु ।
सर्वार्थसिद्धिं प्रवदेन्नराणां विपर्ययस्थेषु विपर्ययः स्यात् ॥१॥

भ०—केन्द्रेति । केन्द्राणि लग्न चतुर्थ सप्तम दशमानि, त्रिकोणसंज्ञे नवपंचमे, शुभाः सौम्यग्रहाः केन्द्रेषु त्रिकोणेषु शुभस्थितेषु, शुभाः स्थिता येषु, सौम्यग्रहयुक्तेष्वित्यर्थः । शुभान्वितेष्विति पाठः । तथा पापेषु पापग्रहेषु केन्द्राष्टमस्थानं वर्जयित्वा अन्यत्र समवस्थितेषु सत्सु नराणां मनुष्याणां सर्वार्थसिद्धि वदेत् सर्वेषां निःशेषाणामर्थानां सिद्धि साधनं वदेद् ब्रूयात् । विपर्यये इति । एषु पापसौम्येषु विपर्यये विपरीते अन्यथास्थितेषु विपर्ययो वैपरीत्यमेव स्याद्भवेत् । एतदुक्तं भवति । यदा पापाः केन्द्रत्रिकोणाष्टमेषु भवन्ति सौम्याः केन्द्रत्रिकोणाष्टमवर्ज्यमन्यत्र भवन्ति तदा सर्वार्थानामसिद्धि प्रवदेत् ॥ १ ॥

वा०—प्रश्नकाल में शुभग्रह केन्द्र (१-४-७-१०) और त्रिकोण (५-९) में रहें और पापग्रह केन्द्र त्रिकोण तथा अष्टम में नहीं रहें तो प्रश्नकर्त्ता के अभीष्ट कार्य की सिद्धि होती है। यदि इसके विपरीत ग्रह रहें अर्थात केन्द्र त्रिकोण में पापग्रह रहें और केन्द्र त्रिकोण तथा अष्टम मे शुभग्रह नही रहें तो प्रश्नकर्त्ता के कार्य की हानि होती है ॥ १ ॥

लाभाऽलाभज्ञानमाह—

त्रिपञ्चलाभास्तमयेषु सौम्या लाभप्रदा नेष्टफलाश्च पापाः ।
तुलाऽथ कन्या मिथुनं घटश्च नृराशयस्तेषु शुभं वदन्ति ॥२॥

भा०—तृतीयपञ्चमे स्थाने प्रसिद्धे लाभ एकादशम्, अस्तमयं सप्तमं एतेषु सौम्याः शुभग्रहाः प्रष्टुर्लाभप्रदाः । एष्वेव त्रिपञ्चलाभास्तमयेषु पापा अशुभग्रहाः नेष्टफला अनिष्टमशोभनं फलं कुर्वन्ति अर्थनाशं समारभन्तीत्यर्थः । तुलेति । तुला-कन्या-मिथुनाः प्रसिद्धाः घटः कुम्भः एते नरराशयः पुंराशयः, एतेषु लग्नेषु सौम्यग्रहाधिष्ठितेषु शुभं भद्रं मुनयो वदन्ति कथयन्तीत्यर्थः ॥ २ ॥

वा०—प्रश्नलग्न से तीसरे-पाँचवें-ग्यारहवें और सातवें इन स्थानों में शुभग्रह रहें तो प्रश्नकर्त्ता के अभीष्ट कार्य की सिद्धि होती है । यदि इन स्थानों में पापग्रह रहें तो कार्य की हानि होती है ।

कार्य सिद्धि हो

कार्य हानि हो
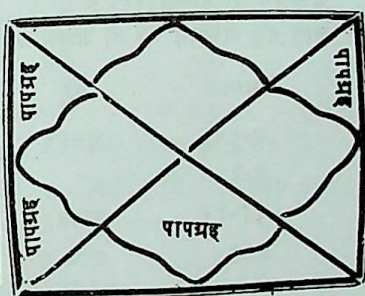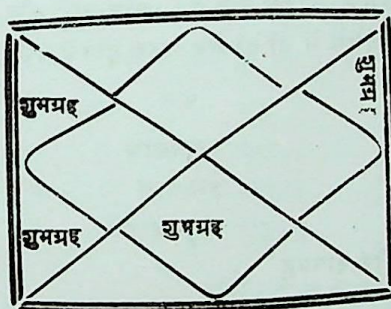
यदि तुला, कन्या, मिथुन, या कुम्भ (द्विपदसंज्ञक) राशि प्रश्नलग्न में हो और शुभग्रह से युत या दृष्ट हो तो प्रश्नकर्त्ता को शुभफल प्राप्त होता है ॥ २ ॥

योगान्तरमाह—

स्थानप्रदा दशमसप्तमगाश्च सौम्या
मानार्थदाः स्वसुतलग्नगता भवन्ति ।

पापा व्ययायसहिता न शुभप्रदाः स्यु-
र्लग्ने शशी न शुभदो दशमे शुभश्च ॥ ३ ॥

भा०—सौम्याः शुभाः ग्रहाः लग्नाद्दशमे सप्तमे च स्थाने गताः समवस्थिताः प्रष्टुः स्थानप्रदाः स्युः। स्वशब्देन धनमुच्यते सुतलग्ने प्रसिद्धे तेषु स्थिताः सौम्याः मानार्थदाः स्युर्भवेयुः। पापा व्ययेति। पापा अशुभग्रहाः व्ययो द्वादशम् आय एकादशं तयोर्द्वयोः सहिताः न शुभप्रदाः स्युः भवेयुः, न शुभफलं प्रयच्छन्ति। लग्न इति। पापा इत्यनुवर्तते, शशी चन्द्रः पापो लग्ने स्थितो न शुभ इति शुभफलं न ददाति। दशमे स्थाने समवस्थितः शुभफलो भवति श्रेयस्करो भवतीत्यर्थः॥ २ ॥

वा०—प्रश्नलग्न से दशवें या सातवें यदि शुभग्रह हों तो प्रश्नकर्त्ता को स्थान लाभ, दूसरे या पाँचवें हो तो द्रव्य लाभ होता है। यदि पाप ग्रह एकादश या द्वादशस्थान में हों तो अशुभ कारक होते हैं। क्षीण-चन्द्र और पाप ग्रह लग्न में रहें तो अशुभ यदि दशम में हों तो शुभकारक होते हैं॥३॥

स्थान	ग्रह	फल
७-१०	शुभग्रह	स्थानलाभ
२-५	”	द्रव्यलाभ
११-१२	पापग्रह	अशुभकारक
लग्न	क्षीण चन्द्र और पापग्रह	”
दशम	” ”	शुभकारक

अन्यच्च शुभाशुभज्ञानमाह—

इन्दुं द्विसप्तदशमायरिपुत्रिसंस्थं
पश्येद् गुरुः शुभफलं प्रमदाकृतं स्यात्।
लग्नत्रिधर्मसुतनैधनगाश्च पापाः
कार्यार्थनाशभयदाः शुभदाः शुभाश्च ॥ ४ ॥

भा०—द्विशब्देन द्वितीयं स्थानमुच्यते सप्तमदशमे प्रसिद्धे आय एकादशं रिपुस्थानं षष्ठं त्रिशब्देन तृतीयं स्थानमुच्यते एतेषु द्वितीय-तृतीय-सप्तम-दशमाऽऽय-रिपुषु संस्थित, तमिन्दुं चन्द्रं गुरुर्जीवः पश्ये-त्तदा प्रष्टुः शुभफलं लाभादिकं प्रमदाकृतं स्त्रीहेतुकं स्याद्भवेत्। लग्नत्रिधर्मेति। लग्नं पृच्छालग्नं त्रिशब्देन तृतीय स्थानं धर्मस्थानं नवमं सुतस्थानं पञ्चमं नैधनमष्टमं एतेषु स्थानेषु पापाः पापग्रहाः गताः समवस्थिताः प्रष्टुः कार्यार्थनाशभयदाः कार्यस्य कृतस्य अर्थस्य धनस्य नाशं विघातं भयं भोतिं ददतीत्यर्थः। शुभदाः शुभाश्चेति। एष्वेव लग्नादिषु स्थानेषु शुभाः सौम्यग्रहाः समवस्थिताः शुभदाः शुभफलप्रदा इत्यर्थः ॥ ४ ॥

वा०—प्रश्नकुण्डली में २-७-१०-११-६-३ इन स्थानों में से किसी में भी चन्द्रमा हो और गुरु की दृष्टि से युक्त हो तो लाभालाभ सम्बन्धी प्रश्न में किसी स्त्री द्वारा लाभ होता है। यदि १-३-९-५-८ इन स्थानों में पाप-ग्रह हों तो कार्य या द्रव्य का नाश होता है अथवा भय होता है। इन स्थानों में यदि शुभग्रह हों तो शुभफल होता है।

स्थान	ग्रह	दृष्टि	फल
२-७-१०-११-६-३	चन्द्र	गुरु की	स्त्री द्वारा लाभ हो
१-३-९-५-८	पापग्रह	×	कार्यहानि, द्रव्यनाश, भय
,,	शुभग्रह	×	शुभफल

रोगाऽऽर्तस्य शुभाशुभज्ञानमाह—

शुभग्रहाः सौम्यनिरीक्षिताश्च विलग्नसप्ताष्टमपञ्चमस्थाः।
त्रिषड्दशाये च निशाकरः स्याच्छुभं भवेद्रोगनिपीडितानाम् ॥५॥

भ०—शुभग्रहा बुध-गुरु-शुक्राः विलग्नं सप्तमाष्टमस्थानानि प्रसिद्धानि एतेषु यथासम्भवं शुभग्रहाः समवस्थितास्ते च सौम्यनि-रीक्षिताः सौम्यैः शुभग्रहैरेव दृष्टाः। एतदुक्तं भवति शुभग्रहदृष्ट-स्थानस्थाः परस्परं पश्यन्ति यदा तदा एष योगो, न केवलं यावन्नि-

शाकरश्चन्द्रमास्त्रिषड्दशाये च स्याद्भवेत् । तृतीयषष्ठदशमानि प्रसिद्धानि आयस्मेकादशस्तेषामन्यतमे चन्द्रमा भवति तदा रोगपीडितस्तं व्याधि गृहीतानां शुभमारोग्यं वदेद् ब्रूयात्, अर्थादेव योगासम्भवे सत्यशुभं वदेदिति, योगे सति शुभं ब्रूयात् ।। ५ ।।

इति वराहमिहिरात्मजदैवज्ञपृथुयशोविरचितायां षट्पंचाशिकायां शुभाशुभाध्यायश्चतुर्थः समाप्तः ।। ४ ।।

वा० —प्रश्नकुण्डली में यदि १-७-८-५ इन स्थानों में से किसी में भी शुभग्रह हों और शुभग्रह की दृष्टि से युक्त हों तथा ३-६-१०-११ इनमें किसी में भी चन्द्र रहे तो रोगी विषयक प्रश्न में रोगी की रोग से निवृत्ति शीघ्र ही होती है । विपरीत ग्रह स्थिति में विपरीत फल समझना चाहिए ।। ५ ।।

शुभग्रह—१-७-८ या ५ में चन्द्रमा—३-६-१० या ११ में दृष्टि—गुरु की	शीघ्र ही रोग से निवृत्ति ।

"वारीश्वरी" हिन्दी टीका सहित षट्पंचाशिका —

शुभाशुभाध्याय चतुर्थ ।। ४ ।।

अथ पञ्चमोऽध्यायः-५

प्रवासचिन्ताध्यायो व्याख्यायते । तत्र आवागमनयोगमाह—

दूरगतस्याऽऽगमनं सुतधनसहजस्थितैर्ग्रहैर्लग्नात् ।
सौम्यैर्नष्टप्राप्ति लब्ध्वागमनं गुरुसिताभ्याम् ॥ १ ॥

भ०—सुतस्थानं पंचमं धनस्थानं द्वितीयं सहजस्थान तृतीयं एतेषु स्थानेषू लग्नात्तात्कालिकात् ग्रहैरादित्यादिभिः सर्वैः समवस्थितैः दूरगतस्य विप्रकृष्टस्थितस्य आगमनं सम्प्राप्ति वदेत् । सौम्यैर्नष्टप्राप्तिमिति । सौम्यैः सौम्यैर्ग्रहैः बुधगुरुसिताक्षीणचन्द्रैः तेष्वेव स्थानेषु व्यवस्थितैः नष्टस्यापहृतस्य वस्तुनः प्राप्ति लाभं वदेत् । तस्यैव प्रवासे नष्टमासीत् स एव वा प्रवासी नष्टोऽदर्शनं गतः तद्दर्शनं भवतीत्यर्थः । लब्वागमनं गुरुसिताभ्यामिति । गुरुर्बृहस्पतिः सितः शुक्रः आभ्यामेष्वेव स्थानेषु समवस्थिताभ्यां लब्वागमनं लघुनाऽल्पेनैव कालेन प्रवासिनामागमनं प्रवदेत् ।। १ ।।

वा०—प्रश्नकुण्डली में पंचम-द्वितीय और तृतीय इन स्थानों में यदि सूर्यादि ग्रह रहें तो दूर देशस्थित प्रवासी शीघ्र ही लौटकर आता है । यदि इन स्थानों में शुभग्रह हों तो नष्टवस्तु शीघ्र ही प्राप्त होती है तथा जिस प्रवासी का कुछ भी पता नहीं चलता है वह भी शीघ्र ही आ जाता है । इन स्थानों में यदि केवल गुरु और शुक्र ये दो ही ग्रह रहें तो प्रवासी भी शीघ्र लौटकर आता है और नष्टवस्तु भी शीघ्र ही प्राप्त होती है ।। १ ।।

स्थान	ग्रह	फल
२-३-५	सूर्यादि ग्रह	प्रवासी शीघ्र लौटे ।
,,	शुभग्रह	नष्टवस्तु शीघ्रमिले, वह प्रवासी जिसका पता न चलता हो वह भी आवे,
२-३-५	गुरु शुक्र	प्रवासी भी शीघ्र लौटे, नष्ट वस्तु भी शीघ्र प्राप्त हो ।

योगान्तरमाह—

जामित्रे त्वथवा षष्ठे ग्रहः केन्द्रेऽथ वाक्पतिः ।
प्रोषिताऽऽगमनं विद्यात्त्रिकोणे ज्ञे सितेऽपि वा ॥ २ ॥

भ०—जामित्रं सप्तमं, सप्तमस्थाने अथवा षष्ठे वा पृच्छालग्नाद्यः समवस्थितः तथा चतुर्णां केन्द्राणां च मध्यादन्यतमे केन्द्रे वाक्पतिर्भवति तदा प्रोषितस्य प्रवासितस्याऽऽगमनं प्राप्ति विद्याज्जानीयात् । त्रिकोणं नवपञ्चमे ज्ञो बुधः, सितः शुक्रः, बुधे शुक्रे वा त्रिकोणयोर्नवमपंचमस्थानयोरेवान्यतमस्थे द्वयोर्वा त्रिकोणस्थयोः प्रोषिताऽऽगमनं विद्यादिति ॥ २ ॥

वा०—प्रश्नकुण्डली में यदि सप्तम या षष्ठ स्थान में कोई भी ग्रह रहे और केन्द्र (१-४-७-१०) में बृहस्पति व त्रिकोण (५-९) में बुध या शुक्र हों तो प्रवासी शीघ्र ही लौटकर आता है ऐसा समझना चाहिए ॥ २ ॥

प्रवासी शीघ्र लौटे
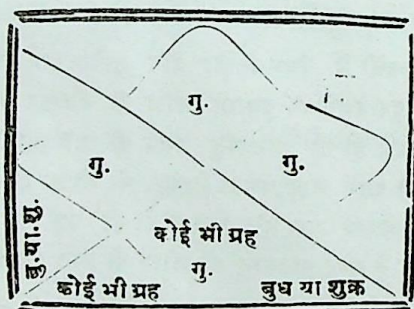
योगान्तरमाह—

अष्टमस्थे निशानाथे कण्टकैः पापवर्जितैः ।
प्रवासी सुखमायातिसौम्यैर्लाभसमन्वितः ॥ ३ ॥

भ०—निशानाथश्चन्द्रमास्तस्मिन् प्रश्नलग्नादष्टमस्थे अष्टमस्थानं समवस्थिते कण्टकानि केन्द्राणि लग्नचतुर्थसप्तमदशमानि

तैः पापवर्जितैः प्रवासी पथिकः सुखेनाऽक्लेशेनाऽऽयाति आगच्छति। सौम्यैः शुभग्रहैः केन्द्रस्थैः प्रवासी लाभसमन्वितः लाभयुतः सुखमायाति ॥ ३ ॥

वा०—प्रश्नकुण्डली में चन्द्रमा अष्टमस्थ हो और केन्द्र में कोई भी पापग्रह नहीं रहे तो प्रवासी सुखपूर्वक लौटकर घर आता है। यदि केन्द्रस्थान में शुभग्रह हों तो प्रवासी बहुत धन धान्य से युक्त होकर सुख पूर्वक लौटता है ॥ ३ ॥

सुखपूर्वक लौटे

धन धान्य युक्त लौटे
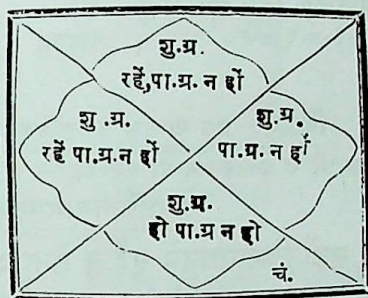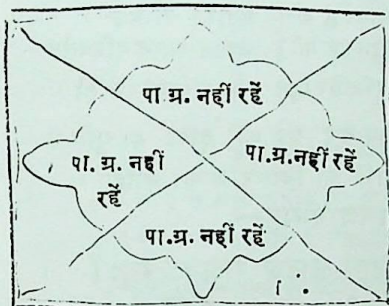
योगान्तरमाह—

पृष्ठोदये पापनिरीक्षिते वा पापास्तृतीये रिपुकेन्द्रगा वा।
सौम्यैरदृष्टा वधबन्धदाः स्युर्नष्टा विनष्टा मुषिताश्च वाच्याः ॥४॥

भ०—पृष्ठोदयाः मेष-कर्कट-धन्वि-मकर-मीनाः पृष्ठोदये पृच्छालग्ने एतेषामन्यतमे तस्मिंश्च पापनिरीक्षिते अशुभग्रहावलोकिते वाशब्दोऽत्र चार्थे एवंविधे योगे प्रवासिनो वधस्ताडनं बन्धो बन्धनं भवेत्। अथवा पापा अशुभग्रहाः लग्नात् तृतीयस्थाने स्थिताः सर्वे एते च सौम्यैः शुभग्रहैरदृष्टा अनवलोकितास्तदा प्रवासिनो नष्टास्तस्मात्स्थानादन्यदेशं गताः। अथवा पापालग्नाद्रिपुस्थाने वा गतास्ते च सौम्यैरदृष्टास्तदा प्रवासिनो मुषिताश्चोरैर्वाऽपहृताः स्युर्भवेयुः

वा शब्दो योगानां विकल्पार्थः । वधबन्धदाः स्युरिति पापानां विशेषणम् ।। ४ ।।

वा०—यदि प्रश्नलग्न पृष्ठोदय राशि (मे. वृ. क. ध. म. मी.) का हो और पापग्रहों से दृष्ट हो, अथवा १-३-४-६-७-१० इन भावों में पापग्रह रहें और शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो प्रवासी का वध (मृत्यु), बन्धन (जेल) या स्थान परिवर्तन हो गया है या उसका सर्वस्वहरण हो गया है ऐसा समझना चाहिए ।। ४ ।।

स्थान	ग्रह	दृष्टि	फल
पृष्ठोदय राशि लग्न में हो	×	पापग्रह की	प्रवासी का वध-
१-३-४-६-७-१०	पापग्रह	शुभग्रह की दृष्टिसेरहित	बन्धन-स्थान परिवर्तन या सर्वस्वहरण हो ।

विशेष—एक या एक से अधिक पाप-क्रूर ग्रह की दृष्टि या युति से प्रवासी के वध-बन्धन या सर्वस्वहरण इत्यादि का विचार करना चाहिए ।

प्रवासिनामागमनकालज्ञानमाह—

ग्रहो विलग्नाद्यतमे गृहे तु तेनाऽऽहता द्वादश राशयः स्युः ।
तावद्दिनान्यागमनस्य विद्यान्निवर्तनं वक्रगतैर्ग्रहैस्तु ।।५।।

भ०—विलग्नात्पृच्छालग्नाद्यतमे यावत्सङ्ख्ये राशौ यः कश्चिद् ग्रहः स्थितः स च स्पष्टगतिस्तिष्ठेत् तेन तत्प्रमाणेन द्वादश राशयः आहता गुणिताः कार्याः । एतदुक्तं भवति द्वादशसङ्ख्यमङ्कमास्थाप्य लग्नात्प्रभृति ग्रहान्तरं राशिसङ्ख्यया गुणयेत् तत्र यावत्सङ्ख्या भवति तावत्संख्यानि दिनानि प्रवासिनः आगमनस्य विद्याज्जानीयात् । तावद्भिर्दिनैः पथिक आगच्छतीत्यर्थः । निवर्तनं वक्रगतैरिति । अथ स ग्रहो वक्रगतिः प्रतीपगतिस्तदा तावत्संख्यैर्दिनैः प्रवासिनः प्रवासान्निवर्तनं भवति ।। ५ ।।

इति वराहमिहिरात्मजदैवज्ञपृथुयशोविरचितायां षट्पञ्चाशिकायां प्रवासचिन्ताध्यायः पंचमः समाप्तः ।। ५ ।।

भा०—प्रवासी के आगमन सम्बन्धी प्रश्न विचार में प्रश्नलग्न से आगे जो पंचतारा ग्रह हों उस भाव की राशि संख्या को १२ से गुणा करने पर जो गुणन फल आवे उतने दिनों में ही प्रवासी लौटकर आता है, अथवा वह ग्रह जब वक्री हो तभी प्रवासी लौटकर आता है।। ५ ।।
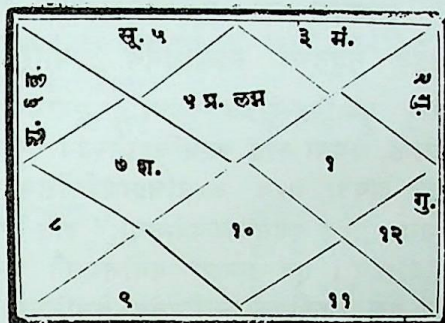
लग्न से आगे तृतीय भाव मे. बु. शु. हैं अतः तृतीय भाव की राशि सं. ६ × १२ = ७२ दिनों में प्रवासी लौटकर आयेगा।

विशेष—लग्न से आगे ग्रह विचार में केवल पंचतारा ग्रहों को ही लेना चाहिए क्योंकि यहीं ग्रह वक्री होते हैं।

"वागीश्वरी" हिन्दी टीका सहित षट्पंचाशिका में
प्रवास चिन्ताध्याय पंचम् ।। ५ ।।

अथ षष्ठोऽध्यायः-६

अथ नष्टप्राप्त्यध्यायो व्याख्यायते । तत्र चौरज्ञानमाह—

स्थिरोदये स्थिरांशे वा वर्गोत्तमगतेऽपि वा ।
स्थितं तत्रैव तद्द्रव्यं स्वकीयेनैव चोरितम् ॥ १ ॥

भ०—स्थिरा वृष-सिंह-वृश्चिक-कुम्भाः एषामन्यतमस्योदये तत्काललग्नतां प्राप्ते, अथवा यस्य कस्यचिद्राशेरुदये तत्काल स्थिर-नवांशके वर्तमाने अथवा यस्य कस्यचिद्राशेर्वर्गोत्तमनवांशकोदये "वर्गोत्तमा नवांशाश्चरादिषु प्रथममध्यपर्यन्तगाः" इति वर्गोत्तमनवांशकानां लक्षणं प्रोक्तम् । एवं लग्नस्य वर्गोत्तमगते नवांशके वा यदपहृतं द्रव्यं नूनं तत् स्वकीयेनाऽऽत्मीयेनैव केनचिच्चोरितमपहृतं तच्च तत्रैव तस्मिन्नेव स्थाने स्थितम् । अन्यथा अपरेणापहृतं तस्मात्तत्स्थानाच्चलितमिति ॥ १ ॥

वा०—नष्टवस्तु सम्बन्धी प्रश्न में यदि स्थिर राशि का लग्न हो या लग्न स्थिर नवांश में हो या लग्न में वर्गोत्तम[1] नवांश हो तो नष्ट वस्तु उसी स्थान के पास है अथवा घर के किसी सदस्य ने या सेवकों ने चुराया है ऐसा समझना चाहिए ॥ १ ॥

स्थानज्ञानमाह—

आदिमध्यावसानेषु द्रेष्काणेषु विलग्नतः ।
द्वारदेशे तथा मध्ये गृहान्ते च वदेद्धनम् ॥ २ ॥

भ०—"द्रेष्काणकाः प्रथमपंचमनवाधिपाना"मिति द्रेष्काणलक्षणं प्रागुक्तम् । आदि द्रेष्काणः प्रथमः मध्ये द्वितीयः अवसाने तृतीयः

---

१. चर राशि का प्रथम, स्थिर का पंचम और द्विस्वभाव का नवम नवमांश वर्गोत्तम नवांश कहलाता है ।

विलग्नं पृच्छालग्नं विलग्नतः विलग्नात्तत्काललग्नादित्थंभूतेषु द्रेष्काणेषु यथासंख्यं हृतं धनं वित्तं द्वारदेशे तथा मध्ये गृहान्ते च धनं स्थितं वदेत् । एतदुक्तं भवति । लग्नस्य प्रथमद्रेष्काणोदये हृतं धनं द्वारदेशे स्थितं वदेत् । द्वितीये द्रेष्काणोदये गृहमध्ये ब्रह्मस्थान-समीपे तृतीये द्रेष्काणोदये गृहान्ते वेश्मपश्चिमभागे वदेद् ब्रूयादिति ।

वा०—प्रश्नलग्न यदि प्रथम द्रेष्काण में हो तो चोरी गई वस्तु घर के द्वार के समीप में, दूसरा द्रेष्काण हो तो घर के मध्य भाग में और तीसरा द्रेष्काण हो तो घर के पीछे या घर के बाहर में है ऐसा समझना चाहिए ।। २ ।।

लग्न द्रेष्काण	चोरी गई वस्तु
प्रथम ,,	घर के द्वार समीप में
द्वितीय ,,	घर के मध्य भाग में
तृतीय ,,	घर के पीछे या बाहर में

लाभालाभज्ञानमाह—

पूर्णः शशी लग्नगतः शुभो वा शीर्षोदये सौम्यनिरीक्षितश्च ।
नष्टस्य लाभं कुरुते तदाऽऽशु लाभोपयातो बलवाञ्छुभश्च ॥३॥

भ०——पूर्णः परिपूर्णमण्डलः शशी चन्द्रः स च लग्नगः पृच्छालग्ने समवस्थितः अथवा शीर्षोदये लग्नगते तत्रैव शुभः सौम्यग्रहः समव-स्थितः स च सौम्यैः शुभग्रहैरेव निरीक्षितो दृष्टः भवति तदा आशु क्षिप्रमेव नष्टस्यापहृतस्य धनादेर्लाभं प्राप्तिं कुरुते विधत्ते । लाभेति । अथवा लग्नाल्लाभे चैकादशे स्थाने शुभः सौम्यग्रहो बलवान्वीर्य-वानुपयातः प्राप्तो भवति तथाऽपि च शब्दान्नष्टस्याऽशु लाभं कुरुते अर्थादेवोक्तयोगानामभावे हृतं न लभ्यत इति ।। ३ ।।

वा०—प्रश्नलग्न में बलवान चन्द्रमा हो अथवा शीर्षोदय राशि[1] लग्न हो और उसमें शुभग्रह की दृष्टि से युक्त कोई शुभग्रह हो तो नष्ट वस्तु का

१. सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ ।

लाभ शीघ्र ही होता है। यदि कोई शुभग्रह बलवान होकर एकादश भाव में रहे तो भी नष्ट वस्तु शीघ्र ही प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

स्थिति	फल
(१) प्रश्न लग्न में पूर्णचन्द्र हो (२) प्रश्न लग्न शीर्षोदय राशि का हो तथा उसमें शुभग्रह से दृष्ट कोई शुभग्रह हो (३) एकादश में बलवान शुभग्रह हो	नष्ट वस्तु का शीघ्र लाभ होता है।

दिगध्वनोः प्रमाणमाह—

दिग्वाच्या केन्द्रगतैरसम्भवे वा वदेद्विलग्नर्क्षात् ।
मध्याच्च्युतैर्विलग्नान्नवांशकैर्योजना वाच्या ॥४॥

भ०—"प्राच्यादिशा रविसितकुजराहुयमेन्दुसौम्यवाक्पतयः" इति ग्रहाणां दिशः उक्ताः तत्र केन्द्रगतैर्ग्रहैर्दिग्दिशा वाच्या वक्तव्या। तात्कालिकलग्नस्य यः कश्चिद् ग्रहः केन्द्रे समवस्थितः तस्य या दिक् तस्यां हृतं वित्तं गतं वदेत्। तद्यथा—सूर्ये लग्नचतुर्थसप्तमदशमानामन्यतमस्थानस्थे पूर्वस्यामेव, शुक्रे आग्नेय्यां, भौमे दक्षिणस्यां, राहौ नैर्ऋत्यां, सौरे पश्चिमायां, बुधे उत्तरस्यां, जीवे ईशान्यामिति। द्वयोर्बहुषु वा केन्द्रगतेष्वधिकबलादसम्भवे वा वदेद्विलग्नर्क्षात् "अज-वृष-मिथुन-कुलीराः पञ्चमनवमैः सहैन्द्राद्या" इति राशीनां दिशः उक्ताः। असत्यविद्यमाने केन्द्रे ग्रहे विलग्नर्क्षात् विलग्नराशितो दिशो वदेद् ब्रूयादिति। तद्यथा—मेष-सिंह-धनुःषु लग्नेषु हृतं वित्तं पूर्वस्यां दिशि गतम्। एवं वृषकन्यामकरेषु दक्षिणस्याम्। मिथुनतुलाकुम्भेषु पश्चिमायां, वृश्चिक-कर्कट-मीनेषूत्तरस्याम। मध्याच्च्युतैरिति। विलग्नं प्रश्नलग्नं तस्य नवांशका नवभागास्तैर्मध्यात्पंचमनवमांशकाच्च्युतैश्चलितैर्योजना वाच्या। एतदुक्तं भवति। प्रश्नलग्ने प्रथमनवांशकात्प्रभृति पंचमनवांशकं यावद्वर्तते तावद् हृतं वित्तं तस्मिन्नेव देशे

प्रागुक्तायां दिशि गतं वदेत् । पंचमादशकाद्यावन्तः परतोंशकाः अतीतास्तावन्ति योजनानि तद्द्रव्यं प्रागुक्तायां दिशि गतमिति ॥४॥

इति वराहमिहिरात्मज-दैवज्ञ-पृथुयशो-विरचितायां षट्पंचाशिकायां नष्टप्राप्त्यध्यायः षष्ठः समाप्तः ॥ ६ ॥

व्या०—नष्टवस्तु की दिशा और दूरी के विचार में—केन्द्रस्थित जो बलवान ग्रह रहे उसी के अनुसार दिशा समझना चाहिए। यदि बलवान ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न राशि से ही दिशा का ज्ञान करना चाहिए ॥ ४ ॥

लग्न स्थित नवांश के द्वारा योजन का प्रमाण समझना चाहिए। जैसे प्रथम से पञ्चम नवांश तक घर के अन्दर ही समझना चाहिए, उसके बाद पञ्चम से आगे जितने संख्यक नवांश बीते हों उतने संख्यक योजन पर वस्तु गई है ऐसा समझना चाहिए।
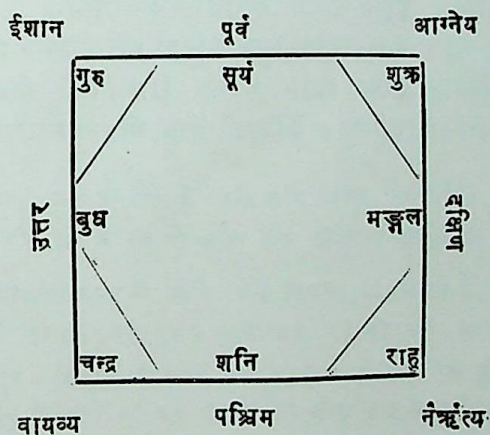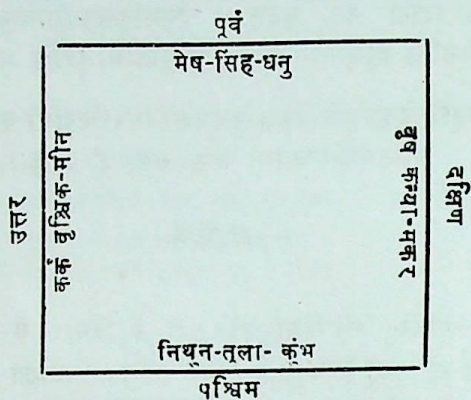
"वागीश्वरी" हिन्दी टीका सहित षट्पंचाशिका में
नष्टप्राप्त्यध्याय षष्ठ ॥ ६ ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः–७

अथ मिश्रकाध्यायो व्याख्यायते। तत्र गर्भिणोपुत्रदुहितृ-जन्मज्ञानं वरस्य कन्यालाभज्ञानञ्चाह––

विषमस्थितेऽर्कपुत्रे सुतस्य जन्मान्यथाङ्गनायाश्च।
लभ्या वरस्य नारी समस्थितेऽतोऽन्यथा वामम् ॥१॥

भ०––अर्कपुत्रे शनैश्चरे प्रश्नलग्नाद्विषमस्थानस्थिते तृतीय-पंचमसप्तमनवमैकादशानि विषमस्थानानि ऐषामन्यतमस्थानस्थे प्रष्टुः सुतस्य जन्म प्रादुर्भावं वदेत्। नन्वत्र लग्नस्य कथं न विषम-स्थानस्य गणना क्रियते-उच्यते अत्राऽऽचार्यौ वराहमिहिरो ज्ञापकः तथा च "विहाय लग्नं विषमर्क्षसंस्थः सौरोऽपि पुंजन्मकरो विलग्नात्"। अन्यथा अन्यप्रकारेण स्थितेऽर्कपुत्रे लग्नादङ्गनायाः स्त्रियाः जन्म वदेत्! तेन द्वितीय-चतुर्थ-षष्ठा-ष्टम-दशम-द्वादशाना-मन्यतमे स्थाने स्थिते सौरे वरस्य नारी कन्या लभ्येति वदेत्। समस्थिते लग्नात्समस्थाने वामं विपरीतं न लभ्यत इत्यर्थः ॥ १ ॥

वा०—गर्भ सम्बन्धी प्रश्न में यदि शनि विषम स्थानों में रहे तो पुत्र जन्म और सम स्थानों में रहे तो कन्या जन्म समझना चाहिए ॥ १ ॥

विवाह सम्बन्धी प्रश्न में शनि यदि विषम भावस्थित हों तो वर को स्त्री लाभ नहीं हो और यदि सम भावस्थित रहें तो स्त्री लाभ हो ऐसा समझना चाहिए। विवाह सम्बन्धी प्रश्न करने वाली यदि स्त्री हो तो विषम भावस्थित शनि के रहने पर वर लाभ हो और सम भावस्थित रहने पर स्त्री को वर लाभ नहीं होगा ऐसा समझना चाहिए।

विषमभावस्थित शनि
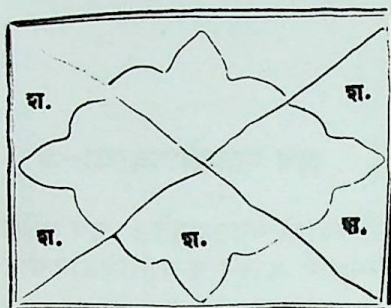
पुत्र जन्म होवे। वर को स्त्री लाभ नहीं होवे। स्त्री को वर लाभ हो।

समभावस्थित शनि
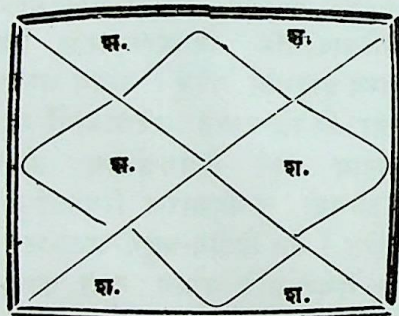
कन्या जन्म होवे। वर को स्त्री लाभ हो। स्त्री को वरलाभ नहीं होवे।

विवाहज्ञानमाह—

गुरुरविसौम्यैर्दृष्टस्त्रिसुतमदायारिगः शशी लग्नात्।
भवति च विवाहकर्ता त्रिकोणकेन्द्रेषु वा सौम्याः ॥२॥

भ०—गुरुर्जीवो रविः सूर्यः सौम्यो बुधः एतैर्दृष्टोऽवलोकितः कीदृशः त्रिसुतमदायारिगः त्रिशब्देन तृतीयस्थानं सुतस्थानं पंचमं मदस्थानं सप्तममाय एकादशमरिस्थानं षष्ठं लग्नादित्येषां स्थाना-

नामन्यतमस्थाने गतः समवस्थितः शशी चन्द्रो गुरुरविसौम्यैर्दृष्टो यदि भवति तदा प्रष्टा विवाहस्य पाणिग्रहणस्य कर्ता विधाता भवति। त्रिकोणकेन्द्रेष्विति। अथवा सौम्याः शुभग्रहाः त्रिकोण-केन्द्रेषु नवमपंचमलग्नचतुर्थसप्तमदशमेषु यथासम्भवं भवन्ति तदा प्रष्टुः विवाहो भवतीत्यर्थं। वाशब्दोऽन्ययोगव्यवच्छेदकार्थः॥ २॥

वा०—विवाह सम्बन्धी प्रश्न में चन्द्रमा यदि ३-५-६-७-११ इन स्थानों में रहे और गुरू-सूर्य या बुध से दृष्ट हो तो विवाह अवश्य होता है, अथवा त्रिकोण (५–९) या केन्द्र (१-४-७-१०) में शुभग्रह रहें तो ऐसे योग में भी विवाह अवश्य होता है॥ २॥

स्थान	ग्रह	दृष्टि	फल
३-५-६-७-११	चन्द्रमा-	गुरू-सू. या बुध	विवाह अवश्य हो
५-९-१-४-७-१०	बु. गु. शु.	×	” ”

वर्षासमये वृष्टिज्ञानमाह—

चन्द्रार्कयोः सप्तमगौ सितार्की सुखेऽष्टमे वाऽपि तथा विलग्नात्।
द्वितीयदुश्चिक्यगतौ तथा च वर्षासु वृष्टिं प्रवदेन्नराणाम्॥३॥

भ०—चन्द्रः शशी अर्कः आदित्यः अनयोः सप्तमगौ सितार्की शुक्र-शनी यथासम्भवं यदि भवतः, अथ वा विलग्नादेव तेनैव प्रकारेण तावेव सितार्की द्वितीयस्थाने दुश्चिक्ये वा भवतस्तयोर्वा स्थान-योस्तदा वर्षासु वृष्टिं वर्षणं वदेत्॥ ३॥

वा०—वर्षा ऋतु में वर्षा सम्बन्धी प्रश्न में प्रश्न कुण्डली में चन्द्र या सूर्य से सप्तम यदि शुक्र-शनि हों अथवा ४-८-२-३ भावों में शुक्र-शनि हों तो वर्षा अच्छी होती हैं॥ ३॥

चन्द्र या सूर्य से सप्तम शुक्र-शनि या ४-८-२-३ भावों में शुक्र-शनि। }	वर्षा अच्छी होती है

प्रष्टुः प्रश्नकाले वृष्टिज्ञानमाह—

सौम्या जलराशिस्थास्तृतीयधनकेन्द्रगाः सिते पक्षे ।
चन्द्रे वाऽप्युदयगते जलराशिस्थे वदेद्वर्षम् ॥४॥

भ०—कर्कमीनमकरकुम्भाः जलराशयः सौम्याः शुभग्रहाः जलराशिषु स्थिताः सिते पक्षे शुक्ले मासार्द्धे पुनरयं विशेषः तृतीयधनकेन्द्रगा यदि भवन्ति तृतीयद्वितीयलग्नचतुर्थसप्तमदशमानि एतेषु यथासम्भवं गताः । वाशब्दोऽन्ययोगापेक्षायाम् । अथवा उदयगते चन्द्रे तत्र जलराशिस्थे पृच्छायां च वर्षासु वृष्टिं प्रवदेत् ॥ ४ ॥

वा०—वर्षा सम्बन्धी प्रश्न काल में यदि शुक्लपक्ष हो और शुभग्रह जलचर राशि (क. म. कु. मी.) के होकर १-२-३-४-७-१० इन भावों में स्थित रहें तो वर्षा अच्छी होती है, अथवा चन्द्रमा जलचर राशि में हों या प्रश्न लग्न में स्थित रहें तो वर्षा अच्छी होती है ॥ ४ ॥

गर्भिणीनां किं जायत इत्येतज्ज्ञानमाह—

पुंवर्गे लग्नगते पुंग्रहदृष्टे बलान्विते पुरुषः ।
युग्मे स्त्रीग्रहदृष्टे स्त्री बुधयुक्ते तु गर्भयुता ॥ ५ ॥

भ०—पुंस्त्री क्रूराक्रूराविति राशीनां पुंस्त्री-सञ्ज्ञा जातके उक्ता । मेषमिथुनसिंहतुलाधन्विकुम्भाः पुंराशयः । वर्गलक्षणं प्रागुक्तम् । पुंवर्गे पुरुषराशिवर्गे लग्नगते तत्काललग्नतां प्राप्ते तस्मिन् पुंग्रहदृष्टे नरग्रहावलोकिते "क्लीबपती बुधसौरी चन्द्रसितौ योषितां नृणां शेषाः" इति ग्रहाणां पुंस्त्रीनपुंसकत्वमभिहितम् । तेन पुंग्रहाः (रविभौमजीवाः) एतेषामन्यतमेन लग्नगते दृष्टे तस्मिंश्च तथाभूते लग्ने बलान्विते वीर्ययुक्ते च पुरुषो जायते ।

"अधिपयुतो दृष्टो वा बुधजीवनिरीक्षितश्च यो राशिः
स भवति बलवान् न यदा युक्तो दृष्टोऽपि वा शेषैः"

रिति लग्नबलमुक्तम् । युग्मे स्त्रीग्रहदृष्टे इति । युग्मे युग्मराशौ स्त्रीसञ्ज्ञके वृषादौ गते स्त्रीग्रहौ चन्द्रसितौ ताभ्यामन्यतमेनावलोकिते बलयुक्ते च स्त्री कन्या जायते । सामान्यप्रश्न-

लग्ने बुधयुक्ते बुधेन संयुक्ते स्त्री गर्भयुता सगर्भा वर्तते अद्यापि न प्रसूयत इत्यर्थः ॥ ५ ॥

वा० —गर्भिणी सम्बन्धी प्रश्न में यदि प्रश्नलग्न पुरुष राशि (विषम राशि) हो और लग्न के षडवर्ग में भी पुरुषराशि ही अधिक आवे तथा पुरुष ग्रह (सू. मं. गु.) बलवान होकर लग्न को देखते हों तो गर्भिणी को पुत्र होता है।

स्त्री राशि (समराशि) लग्न में हो और लग्न के षडवर्ग[1] में भी स्त्री राशि ही अधिक आवे तथा स्त्री ग्रह (चं. शु.) बलवान होकर लग्न को देखते हों तो गर्भवती को कन्या होती है।

बुध यदि लग्न में स्थित रहे तो गर्भिणी को अभी प्रसव नहीं हुआ है ऐसा समझना चाहिए ॥ ५ ॥

प्रष्टुः कीदृशी स्त्री-पुरुषो वा चेतसि इति ज्ञानमाह—

कुमारिकां बालशशी बुधश्च वृद्धां शनिः सूर्यगुरू प्रसूताम् ।
स्त्रीकर्कशां भौमसितौ विधत्त एवं वयः स्यात्पुरुषेषु चैवम् ॥६॥

भ० - शुक्लप्रतिपत्प्रभृतिदशम्यन्तं यावच्छशी बालः। एकादशी-प्रभृति कृष्णपञ्चमीं यावद्युवा। षष्ठ्याद्यमावास्यान्तं यावद्वृद्धः। तत्रपृच्छालग्नं यदि स बालशशी बालचन्द्रः पश्यति लग्ने वा तथाभूतः स्थितः तदा प्रष्टुः कुमारिकां वदेत्। एवमेव बुधः पश्यति तत्रा-वस्थितस्तयापि कुमारिकामथदिव, यौवनस्थे चन्द्रे यौवनोपेतां, वृद्धे वृद्धामिति। केचिद् बालां कुमारीं च शशो बुधश्चेति पठन्ति। शशी बालां करोति आपुष्पं पुष्पदर्शनं यावदित्यर्थः। बालां स्त्रियं बुधः कुमारिकामनूढां करोति आपुष्पं पुष्पदर्शनं यावदित्यर्थः। बालां स्त्रियं बुधः कुमारिकामनूढां करोति। एवं शनिः सौरो विगतयौवनां जराभिभूतां करोति। सूर्योऽर्कः गुरुर्बृहस्पतिः एतौ प्रसूतां प्रसवयुतां स्त्रियं विधत्तः कुरुतः। भौमोऽङ्गारकः सितः शुक्रः एतौ कर्कशामति-

---

1. होरा-द्रेष्काण-सप्तमांश-नवमांश-द्वादशांश और त्रिशांश ॥

दारुणां स्त्रियं कुरुतःएवमनेन प्रकारेण वयः शरीरावस्था स्याद्भवेत् । पुरुषेषु चैवमिति । पुरुषेष्वपि पृच्छासमये प्रष्टुः वयोज्ञानमेवमनेन प्रकारेण वदेत् ॥ ६ ॥

वा०—प्रश्नकर्ता को कैसी स्त्री इच्छित है ऐसे प्रश्न में यदि बाल चन्द्रमा[१] प्रश्न लग्न में स्थित रहे या लग्न को देखता हो अथवा बुध लग्न में हो या उसकी दृष्टि लग्न पर हो तो प्रश्नकर्त्ता कुमारिका स्त्री की इच्छा रखता है।

यदि प्रश्न लग्न में सूर्य या गुरू हो या लग्न पर शनि की दृष्टि हो तो वृद्धा स्त्री की इच्छा है। यदि लग्न में सूर्य या गुरू हों तो प्रसूता स्त्री की इच्छा है, यदि लग्न में मंगल या शुक्र हों या उनकी दृष्टि लग्न पर हो तो कर्कशा और युवती स्त्री की इच्छा है ऐसा समझना चाहिए।

इसी तरह स्त्री किस प्रकार के पुरूष की इच्छा रखती है उसका भी विचार करना चाहिए ॥ ६ ॥

ग्रह	स्थिति	दृष्टि	फल
बालचन्द्र	लग्न मे हो	लग्न पर हो	कुमारिका स्त्री की इच्छा
बुध	,,	,,	
सूर्य-गुरू	,,	×	प्रसूता स्त्री की इच्छा
शनि	×	लग्न को देखे	
मंगल-शुक्र	लग्न में हों या लग्न को देखें		कर्कशा और युवती स्त्री की इच्छा

चित्ता सम्बन्धिनो ज्ञानमाह—

आत्मसमं लग्नगतैर्भ्राता सहजस्थितैर्ग्रहैर्लग्नात् ।
माता वा भगिनी वा चतुर्थगैः शत्रुगैः शत्रुः ॥ ७ ॥
भार्या सप्तमसंस्थैर्नवमे धर्माश्रितो गुरुर्दशमे ।
स्वांशपतिमित्रशत्रुषु तथैव वाच्यं बलयुतेषु ॥ ८ ॥

---

२. शुक्लपक्ष १ से १० तक बाल, शुक्ल १० से कृष्ण ५ तक युवा, कृष्णपक्ष ५ से अमावास्या तक चन्द्र वृद्ध रहता है।

भ०—ग्रहैरादित्यादिभिः सबलैर्लग्नगतैर्लग्नस्थैः प्रष्टुः आत्मसमं स्वशरीरतुल्यः कश्चिन्मनसि वर्तत इति। तत्कार्यं वक्तव्यमित्येवं लग्नात्सहजस्थितैस्तृतीयगैः भ्राता, सुतगैः पञ्चमस्थानस्थैः सुतः पुत्रः, चतुर्थगैश्चतुर्थस्थानस्थैर्माता जननी भगिनी चेति वाच्यम्। शत्रुगैः षष्ठस्थानस्थैः रिपुचिन्ता ॥ ७ ॥

भार्येति——लग्नात्सप्तमस्थानाश्रितैः सबलैर्ग्रहैः पत्नी वाच्या। नवमे नवमस्थानस्थैर्धर्माश्रितो धर्मयुक्त इति चिन्ता वाच्या। दशमे गुरुराचार्य इति। स्वांशपतिरित्यादि। स्वश्चासावंशश्च स्वांश आत्मीयो नवभागस्तस्य पतिः स्वामी पृच्छालग्ने तत्कालं यो नवांशक उदितः तत्पतिर्यदा लग्नस्थो भवति तदा प्रष्टुः आत्मचिन्तेति वाच्यम्। अथ स्वांशपतिमित्रं तत्काललग्ने स्थितं तदा मित्रं चिन्तित-मिति वाच्यम्। अथ स्वांशपतिशत्रुः रिपुस्तत्कालं लग्ने स्थितस्तदा शत्रुचिन्ता गतेति वाच्यम्। अथ निर्दिष्टस्थानेषु द्वौ ग्रहौ बहवो वा भवन्ति तदा तेषां मध्याद्यो बलयुतः स यत्र स्थितः तं प्रष्टुः चित्तो गतं स्थितमिति वाच्यम्। तथैव तेनैव प्रकारेण यथाभिहितेषु बल-युक्तेषु वीर्यवत्सु मध्यात्कार्यं वाच्यम्। 'शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवेः' इत्यादिना ग्रन्थे च जातके मित्रशत्रु-विभागः प्रदर्शित इति ॥ ८ ॥

चा०—मानसिक चिन्ता सम्बन्धी प्रश्न में यदि प्रश्न लग्न में कोई बलवान ग्रह स्थित हो तो अपने सदृश किसी व्यक्ति की चिन्ता, तृतीय में बलवान ग्रह हो तो भ्रातृ चिन्ता, पञ्चम में हो तो सन्तति सम्बन्धि चिन्ता, चतुर्थ में हो तो माता या बहन की चिन्ता, षष्ठ में हो तो शत्रु की, सप्तम में हो तो स्त्री की, नवम में हो तो धर्म की और दशम में हो तो पिता या गुरू के विषय में चिन्ता समझनी चाहिए।

प्रश्न लग्न जिस नवांश में रहे उसका अधिपति ग्रह बली होकर यदि लग्न में रहे तो अपने विषय में चिन्ता, यदि नवांशाधिपति का मित्र ग्रह बली होकर लग्न में रहे तो मित्र सम्बन्धी चिन्ता और यदि नवांशाधिपति

का शत्रु ग्रह बलवान होकर लग्न में रहे तो शत्रु सम्बन्धी चिन्ता समझनी चाहिए ।। ७–८ ।।

प्रवास चिन्ताज्ञानमाह—

चरलग्ने चरभागे मध्याद् भ्रष्टे प्रवासचिन्ता स्यात् ।
भ्रष्टः सप्तमभवनात् पुनर्निवृत्तो यदि न वक्री ॥ ९ ॥

भ०—चराणां मेष-कर्कट-तुला-मकराणामन्यतमे लग्ने तत्र तत्कालं चरभागे चरनवांशके उदितस्तस्मिंश्चरलग्ने मध्यात्पञ्चम-नवांशकात् भ्रष्टे च्युते षष्ठादिकमंशं तत्र वर्तत इत्यर्थः । प्रष्टुः प्रवासचिन्ता स्याद्भवेत् । प्रवासनिमित्तं चिता भवेदित्यर्थः । अत्रैव निश्चयमाह । भ्रष्ट इति । सप्तमभवनं पृच्छालग्नात्सप्तमो राशिस्त-स्मात् तत्कालं यदि कश्चित् ग्रहो भ्रष्टः प्रच्युतः चलितः स च भौमादिकस्तदा प्रवासी पुनर्निवृत्तो निवर्तत इत्यर्थः । प्रवासचिन्ता तेन किन्तु न यास्यति । यदि न वक्रीति । योऽसौ सप्तमभवनाद् भ्रष्टग्रहः स यदि वक्री प्रतीपगतिर्न भवति तदा निवृत्त एव वाच्यः । अथ वक्री तथा निवृत्तो यास्यतीति वाच्यम् ।। ९ ।।

वा०—यदि प्रश्न लग्न चरराशि का हो या लग्न का नवांश चर राशि का होकर पञ्चम से आगे (षष्ठ से नवम तक में) गया हो तो पृच्छक को प्रवास सम्बन्धी चिन्ता है और उसको प्रवास करना पड़ेगा ऐसा समझना चाहिए ।

यदि सप्तम स्थानस्थित कोई भी पञ्चतारा ग्रह अष्टम में जाने वाला हो और वक्री होकर पुनः सप्तम में नहीं आनेवाला हो तो पृच्छक को प्रवासी की और उसके वापस लोटने सम्बन्धी चिन्ता समझनी चाहिए ।

अष्टम में गया हुआ ग्रह यदि वक्री होकर सप्तम में आने वाला हो तो प्रवासी अपने प्रवास से शीघ्र ही लौटेगा ऐसा समझें ।। ९ ।।

कीदृश्या स्त्रिया सह संयोग इति ज्ञानमाह–

अस्ते रविसितवक्रैः परजायां स्वां गुरौ बुधे वेश्याम् ।
चन्द्रे च वयः शशिवत् प्रवदेत्सौरेऽन्त्यजातीनाम् ॥१०॥

भ०––रविरादित्यः सितः शुक्रः वक्रोऽङ्गारकः एतेषामन्यतमे पृच्छालग्नादस्ते सप्तमे स्थाने परजायां परपत्नीं परभार्यया सह संयोग आसीत् एवं गुरौ जीवे स्थिते स्वामात्मीयां स्त्रियमिति प्रवदेत् । बुधे वेश्यां साधारणस्त्रियं । चन्द्रे चैवं साधारणस्त्रियमेव वदेत् । तथा तेनैव प्रकारेण सौरे शनैश्चरे सप्तमेऽन्त्यजातीनां निकृष्टजातीनां स्त्रियमगम्यामिति प्रवदेत् । वयः शशिवदिति । तासां सर्वासां स्त्रीणां शशिवच्चन्द्रवद्वयः शरीरावस्थां प्रवदेदिति । बालचन्द्रे बालां, यूनि चन्द्रे यौवनोपेतां, वृद्धे वृद्धां, चन्द्रप्रविभागः प्रागेव दर्शित इति ॥ १० ॥

वा०––प्रेम प्रसंग सम्बन्धी प्रश्न में यदि सप्तम भाव में सूर्य-शुक्र या मंगल इनमें से कोई भी रहे तो पर स्त्री के साथ-प्रेम प्रसंग है, यदि गुरू सप्तम भाव में हो तो अपनी स्त्री से प्रेम प्रसंग है यदि बुध हो तो वेश्या से और यदि शनि हो तो नीच वर्ण की स्त्री से प्रेम प्रसङ्ग है ऐसा समझना चाहिए ।

प्रेमिका स्त्री की अवस्था का विचार चन्द्रमा की अवस्था से करनी चाहिए जैसे चन्द्र यदि बाल्यावस्था में हो तो स्त्री भी बाल्यावस्था की, चन्द्र युवावस्था में तो स्त्री भी युवावस्था की और चन्द्र वृद्धावस्था में तो स्त्री भी वृद्धावस्था की रहती है ॥ १० ॥

भाव	ग्रह	फल
सप्तम में	सूर्य-मंगल या शुक्र हो	पर स्त्री से प्रेम प्रसङ्ग
”	गुरू	अपनी स्त्री से प्रेम प्रसङ्ग
”	बुध	वेश्या स्त्री से प्रेम प्रसङ्ग
”	शनि	नीच वर्णा स्त्री से प्रेम प्रसङ्ग

रोगाऽऽर्तस्य परदेशस्थितिज्ञानमाह—

मन्दः पापसमेतो लग्नान्नवमे शुभैरयुतदृष्टः ।
रोगाऽऽर्तः परदेशी चाऽष्टमगो मृत्युकर एव ॥ ११ ॥

भ०—मन्दः सौरः स च पापसमेतो रविभौमक्षीणचन्द्राणामन्यतमेन युक्तस्तथाभूतो लग्नात्पृच्छालग्नान्नवमे स्थाने स्थितस्तत्र च शुभैरयुतदृष्टः तत्र च शुभग्रहाणामन्यतमेन न युक्तो नाऽप्यवलोकितस्तदा रोगार्त्तः रोगो ज्वरादिस्तेनार्तःपीडितः परदेशेऽन्यस्मिन्ग्रामादौ स्थितः । तथाऽनेनैव लक्षणेन युक्तः सौरो लग्नादष्टमे स्थाने गते समवस्थितस्तदा तस्यैव रोगाऽऽर्त्तस्य मरणं करोति ॥ ११ ॥

वा०—प्रवासी के कष्ट सम्बन्धी प्रश्न में यदि नवम भाव में शनि पाप ग्रह से युत या दृष्ट होकर स्थित हो और वह शुभ ग्रह की युति या दृष्टि से रहित रहे तो प्रवासी को परदेश में कष्ट है ऐसा समझें ।

शनि यदि अष्टम में पाप ग्रह से युत या दृष्ट होकर रहे और शुभ ग्रह की दृष्टि या युति से रहित हो तो प्रवासी की परदेश में मृत्यु हो गई है ऐसा समझना चाहिए ॥ ११ ॥

पिताऽन्यदेशस्थस्तत्र किमद्याऽपि तिष्ठति इति ज्ञानमाह—

सौम्ययुतोऽर्कः सौम्यैः संदृष्टश्चाष्टमर्क्षसंस्थश्च ।
तस्माद् देशादन्यं गतः स वाच्यः पिता तस्य ॥ १२ ॥

भ०—अर्कः सूर्यः सौम्यैः शुभग्रहैर्युतः सह तिष्ठतस्तेषामन्यतमेन च दृष्टोऽवलोकितो भवति तथाभूतो लग्नाच्चाष्टमर्क्षसंस्थितस्तत्संस्थोऽष्टमस्थानमुपगतो भवति तस्माद् देशाद् ग्रामादिकादन्यं देशान्तरं गतः तस्य प्रष्टुः पिता जनकः प्राप्त इति वाच्यं, अन्यथा तत्रैव स्थितः ॥ १२ ॥

वा०—पिता के प्रवास सम्बन्धी प्रश्न में यदि अष्टम भाव में सूर्य शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट होकर रहे तो पृच्छक का पिता उस स्थान से दूसरे

जगह चला गया है ऐसा समझना चाहिए। अष्टमस्थ सूर्य यदि शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट नहीं हो तो पृच्छक का पिता उसी स्थान में है ऐसा समझें ॥ १२ ॥

परिवर्तित है स्थिर है

तस्करस्य वयोरूपज्ञानञ्चाह—

अंशकाज्ज्ञायते द्रव्यं द्रेष्काणैस्तस्कराः स्मृताः ।
राशिभ्यः कालदिग्देशा वयो ज्ञातिश्च लग्नपात् ॥ १३ ॥

भ०—अंशकाल्लग्नस्य तात्कालिकस्य नवमभागाद् द्रव्यमपहृतं धातुमूलजीवाख्यं तज्ज्ञायते। एतत्पूर्वमेव व्याख्यातम्। "स्वांशे विलग्ने यदि वा त्रिकोणे" इति। तस्य च राशितुल्यो वर्णो वक्तव्यः। तथा च लघुजातके प्रोक्तम्

"अरुणसितहरितपाटलपाण्डुविचित्राः शितेतरपिशङ्गौ।
पिङ्गलकर्बुरबभ्रुकमलिना रुचयो यथासंख्य'मिति ॥

तस्य च दीर्घमध्यह्रस्वत्वं नवांशकवशाज्ज्ञेयम्। तेन च कुम्भ-मीन-मेष-वृषा ह्रस्वाः, मिथुन-कर्कट-धन्वि मकराः मध्याः, सिंह-वृश्चिक-कन्या-तुला दीर्घास्तथा चास्मदीये प्रश्नज्ञाने—

"मेषवृषकुम्भमीना ह्रस्वा युगकर्किचापधरमकराः !
मध्या तथा मुनीन्द्रैर्हरियुवतितुलालयः स्मृता दीर्घाः" ॥

इति ह्रस्वं परिवर्तुलं मध्यमायतं दीर्घम्। अंशकपतौ सबलेऽन्त-रसारमल्पबले सुखी नीचस्थितेऽस्तमिते वाऽपि नष्टप्रायमेव। एवं

रोगाऽऽर्तस्य परदेशस्थितिज्ञानमाह—

मन्दः पापसमेतो लग्नान्नवमे शुभैरयुतदृष्टः ।
रोगाऽऽर्तः परदेशी चाऽष्टमगो मृत्युकर एव ॥ ११ ॥

भ०—मन्दः सौरः स च पापसमेतो रविभौमक्षीणचन्द्राणामन्यतमेन युक्तस्तथाभूतो लग्नात्पृच्छालग्नान्नवमे स्थाने स्थितस्तत्र च शुभैरयुतदृष्टः तत्र च शुभग्रहाणामन्यतमेन न युक्तो नाऽप्यवलोकितस्तदा रोगार्त्तः रोगो ज्वरादिस्तेनार्तःपीडितः परदेशेऽन्यस्मिन्ग्रामादौ स्थितः । तथाऽनेनैव लक्षणेन युक्तः सौरो लग्नादष्टमे स्थाने गते समवस्थितस्तदा तस्यैव रोगाऽऽर्त्तस्य मरणं करोति ॥ ११ ॥

वा०—प्रवासी के कष्ट सम्बन्धी प्रश्न में यदि नवम भाव में शनि पाप ग्रह से युत या दृष्ट होकर स्थित हो और वह शुभ ग्रह की युति या दृष्टि से रहित रहे तो प्रवासी को परदेश में कष्ट है ऐसा समझें ।

शनि यदि अष्टम में पाप ग्रह से युत या दृष्ट होकर रहे और शुभ ग्रह की दृष्टि या युति से रहित हो तो प्रवासी की परदेश में मृत्यु हो गई है ऐसा समझना चाहिए ॥ ११ ॥

पिताऽन्यदेशस्थस्तत्र किमद्याऽपि तिष्ठति इति ज्ञानमाह—

सौम्ययुतोऽर्कः सौम्यैः संदृष्टश्चाष्टमर्क्षसंस्थश्च ।
तस्माद् देशादन्यं गतः स वाच्यः पिता तस्य ॥ १२ ॥

भ०—अर्कः सूर्यः सौम्यैः शुभग्रहैर्युतः सह तिष्ठतस्तेषामन्यतमेन च दृष्टोऽवलोकितो भवति तथाभूतो लग्नाच्चाष्टमर्क्षसंस्थितस्तत्संस्थोऽष्टमस्थानमुपगतो भवति तस्माद् देशाद् ग्रामादिकादन्यं देशान्तरं गतः तस्य प्रष्टुः पिता जनकः प्राप्त इति वाच्यं, अन्यथा तत्रैव स्थितः ॥ १२ ॥

वा०—पिता के प्रवास सम्बन्धी प्रश्न में यदि अष्टम भाव में सूर्य शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट होकर रहे तो पृच्छक का पिता उस स्थान से दूसरे

जगह चला गया है ऐसा समझना चाहिए। अष्टमस्थ सूर्य यदि शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट नहीं हो तो पृच्छक का पिता उसी स्थान में है ऐसा समझें ॥ १२ ॥

परिवर्तित है स्थिर है

तस्करस्य वयोरूपज्ञानश्चाह--

अंशकाज्ज्ञायते द्रव्यं द्रेष्काणैस्तस्कराः स्मृताः ।
राशिभ्यः कालदिग्देशा वयो ज्ञातिश्च लग्नपात् ॥ १३ ॥

भ०--अंशकाल्लग्नस्य तात्कालिकस्य नवमभागाद् द्रव्यमपहृतं धातुमूलजीवाख्यं तज्ज्ञायते। एतत्पूर्वमेव व्याख्यातम्। "स्वांशो विलग्ने यदि वा त्रिकोणे" इति। तस्य च राशितुल्यो वर्णो वक्तव्यः। तथा च लघुजातके प्रोक्तम्

"अरुणसितहरितपाटलपाण्डुविचित्राः शितेतरपिशङ्गौ ।
पिङ्गलकर्बुरबभ्रुकमलिना रुचयो यथासंख्य'मिति ॥

तस्य च दीर्घमध्यह्रस्वत्वं नवांशकवशाज्ज्ञेयम्। तेन च कुम्भ-मीन-मेष-वृषा ह्रस्वाः, मिथुन-कर्कट-धन्वि मकराः मध्याः, सिंह-वृश्चिक-कन्या-तुला दीर्घास्तथा चास्मदीये प्रश्नज्ञाने—

"मेषवृषकुम्भमीना ह्रस्वा युगकर्किचापधरमकराः !
मध्या तथा मुनीन्द्रैर्हरियुवतितुलालयः स्मृता दीर्घाः" ॥

इति ह्रस्वं परिवर्तुलं मध्यमायतं दीर्घम्। अंशकपतौ सबलेऽन्त-रसारमल्पबले सुखी नीचस्थितेऽस्तमिते वाऽपि नष्टप्रायमेव। एवं

मंशकाद् द्रव्यं ज्ञायते। द्रेष्काणैर्लग्नत्रिभागैस्तस्कराश्चौराः स्मृता उक्ताः। यादृशी द्रेष्काणस्याकृतिस्तादृशो एव तस्करस्य वक्तव्या। तद्यथा—

मेषप्रथमे द्रेष्काणे पुरुषः परशुहस्तः कृष्णो रक्तनेत्रः रौद्रः। द्वितीये द्रेष्काणे स्त्री लौहिताम्बरा स्थूलोदरो दीर्घमुखैकपादा। तृतीये द्रेष्काणे पुमान् क्रूरः कपिलो रक्ताम्बरः दण्डहस्तः।

वृषस्य प्रथमद्रेष्काणे स्त्री कुञ्चितलूनकेशा स्थूलोदरी दीर्घपादा। द्वितीये नरः कलावित् लाङ्गलशस्त्रकर्मणि कुशलः। तृतीये नरो बृहत्कायः।

मिथुनस्य प्रथमद्रेष्काणे स्त्री रूपान्विता हीनप्रजा। द्वितीये पुरुषः उद्यानसंस्थितः अपत्यरहितः कवची धनुष्मान्। तृतीये पुमान् रत्न-भूषितः पण्डितो धनुष्मान्।

कर्कटप्रथमे पुरुषः हस्तिसदृशशरीरः सूकरमुखः। द्वितीये स्त्री यौवनोपेता कर्कशा अरण्यस्था। तृतीये पुरुषः सर्पवेष्टितः नौस्थः सुवर्णाभरणान्वितः।

सिंहप्रथमे शाल्मलीसंस्थो गृध्रजन्तुः शुकाननः। द्वितीये पुरुषो धनुष्मान् नताग्रनासः तृतीये नरः कूर्ची कुञ्चितकेशः दण्डहस्तः।

कन्याप्रथमे स्त्री पुष्पयुता पूर्णेन घटेनोपलक्षिता दग्धाम्बरा गुरुकुलं वाञ्छति। द्वितीये पुरुषो गृहीतलेखनीकः श्यामो विस्तीर्ण-कार्मुकः। तृतीये स्त्री गौरा कुम्भकुचा घटहस्ता देवालये प्रवृत्ता।

तुलाप्रथमे पुरुषः तुलाहस्तः वीथ्यापणगतः उन्नतहस्तः भाण्डं चिन्तयति। द्वितीये पुरुषः कलशधरो गृध्रमुखो क्षुधितस्तृषितश्च। तृतीये पुरुषः दीर्घमुखो धनुष्पाणिः।

वृश्चिकप्रथमे स्त्री नग्ना स्थानच्युता सर्पनिबद्धपादा मनोरमा। द्वितीये भर्तृकृते भुजङ्गावृतशरीरस्थानमुखान्यमभिवाञ्छति। तृतीये पुरुषश्चिपिटवक्त्रः।

धनुःप्रथमे पुरुषो धनुष्मान्। द्वितीये स्त्री सुरूपा गौरवर्णा। तृतीये पुरुषो दण्डहस्तः कूर्ची।

मकरप्रथमे पुरुषो रोमशः स्थूलदन्तो वन्धभृत् रौद्रवदनः। द्वितीये स्त्री श्यामाऽलङ्कारान्विता। तृतीये पुरुषः दीर्घमुखो धनुष्मान्।

कुम्भप्रथमे पुरुषः गृध्रतुल्यमुखः सकम्बलः। द्वितीये स्त्री रक्ताम्बरा। तृतीये पुरुषः श्यामः।

मीनप्रथमे द्रेष्काणे पुरुषो नौस्थः। द्वितीये स्त्री गौरा नौस्था। तृतीये द्रेष्काणे पुरुषः नग्नः मांससर्पवेष्टिताङ्गः।

एतद्बृहज्जातके वराहमिहिरेण प्रोक्तम्। एवं द्रेष्काणैस्तस्करा उक्ता इति। राशिभ्यः उक्ता इति। राशिभ्यः कालदिग्देशः इति। राशीनां कालविभागः––"मेषाद्याश्चत्वारः सधन्विमकराः क्षपाबला ज्ञेया" इति जातके उक्तम्। तेन मेषवृषमिथुनकर्कट धन्विमकराणा मन्यतमे लग्ने संस्थेरात्रावपहृतम्। सिंह कन्या तुलावृश्चिक कुम्भ-मीनानामन्यतमे दिवालग्ने स्थिते दिवागतमिति। एवं कालदिङ्मेष-सिंहधनुषि पूर्वस्यां गतम्। वृषकन्यामकरैर्दक्षिणस्यां। मिथुनतुला-कुम्भैः पश्चिमायां कर्कवृश्चिकमीनैरुत्तरस्यां दिशि गतमिति। अथ मेषलग्ने पृच्छाकाले स्थिते मेषेचरे भूमौ, वृषे गोकुलादौ, मिथुने गीतनृत्यस्थाने संग्रामभूमौ वा, कर्कटके जलसमीपे, सिंहे अरण्यभूमौ, कन्यायां नौसमीपे, तुलायामापणगृहे, वृश्चिके बिले श्वभ्रे, धनुषि संग्रामे च प्रकारभूमौ, मकरे जलसमीपे, कुम्भे शिल्पगृहे भाण्डोप-स्करसमीपे, मीने जलसमीप इति। स्वचराश्च सर्वे इति बृहज्जातके प्रोक्तम्। वयो जातिश्च लग्नपादिति। लग्नपात् लग्नेशात् चौरस्य वयःप्रमाणं जातिं च वदेत्। तथा च संहितायाम्—

"वयांसि तेषां स्तनपानबाल्यव्रतस्थिता यौवनमध्यवृद्धाः।
अतीववृद्धा रविचन्द्रभौमज्ञशुक्रवाग्मीनशनैश्चराणा"मिति।

एवं चन्द्रे लग्नपतौ शिशुः भौमे तु चतुर्थवर्षाधिकः, बुधे ब्रह्म-चारी द्वादशाब्दः, शुक्रे यौवनोपेतः द्वात्रिंशदब्दः, गुरौ मध्यवयः खपञ्चाब्दः, सूर्ये सप्तत्यब्दः वृद्धः, सौरेऽतीववृद्धः अशीत्यब्दः। जातिः ब्राह्मणादिः।

"जीवसितौ विप्राणां क्षत्रस्यारोष्णगविशां चन्द्रः।
शूद्राधिपः शशिसुतः शनैश्चरः सङ्करभवाना"मिति ॥
इतिवराहमिहिरात्मज-दैवज्ञ-पृथुयशो-विरचितायां षट्पञ्चाशिकायां
मिश्रकाध्यायः सप्तमः समाप्तः।

वा०—नष्ट वस्तु का ज्ञान प्रश्न लग्न के नवमांश की राशि के अनुसार किया जाता है। वस्तु के वर्ण का निर्णय भी नवमांश राशि के वर्णानुसार ही होता है। नवमांश राश्यानुसार ही ह्रस्व-दीर्घ-मध्य का विचार करके वस्तु की आकृति का निर्णय[1] किया जाता है ॥ १३ ॥

लग्न के द्रेष्काण राशि के वर्णानुसार चोर का वर्ण ज्ञान किया जाता है। समय का ज्ञान राशियों के दिवाबली-रात्रिबली के अनुसार करना चाहिए। राशियों के दिशानुसार ही दिशा का भी ज्ञान करना चाहिए।

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
कोटि	धातु	जीव	मूल	धा.	जी,	मू.	धा.	जी.	मू.	धा.	जी.	मू.
वर्ण	लाल	श्वेत	हरित	श्वेत रक्त	पाण्डु	चित-कबरा	श्याम	पीत-रक्त	पीत	कर्पूर	चित कबरा	मलिन
आकार	ह्रस्व	ह्रस्व	मध्य	मध्य	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	मध्य	मध्य	ह्रस्व	ह्रस्व
समय बली	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	रात्रि	रात्रि	दिवा	दिवा
दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	दक्षिण	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
स्थान	भूमि	गोकुल	गीत नृत्य स्थान	जल समीप	अरण्य	नौका	दुका	बिल खड्ड	[illegible] भूमि	[illegible] समीप	शिल्प गृह	जल समीप

"वागीश्वरी" हिन्दी टीका सहित षट्पञ्चाशिका में मिश्रकाध्याय सप्तम् ॥७॥

१. ह्रस्व = छोटा आकार, मध्य = मध्याकार, दीर्घ = ऊँचा अथवा लम्बा चौड़ा।

श्लोकानुक्रमणिका